

# त्रिशूल

षष्ठम् संस्करण

2020 - 21

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हमीरपुर

# राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान हमीरपुर

प्रकृति, ज्ञान, दर्शन व प्रौद्योगिकी इन सबका समुचित मिश्रण है, तो निश्चय ही वो राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान हमीरपुर है। धौलधर की ढलानों में बसा यह संस्थान ना सिर्फ मनमोहक है अपितु यहाँ शिक्षा अर्जित करने आये विद्यार्थीवृंद, अपनी शाखाओं में उच्चतम स्तर का ज्ञान व अनुभव रखने वाले गुरुजन तथा संस्थान प्रबंधक ; सभी मिलकर भारतवर्ष को प्रौद्योगिकी की दिशा में एक नया संवेग देने को तत्पर है। आश्चर्य तनिक भी नहीं होता जब आधुनिक तकनीकों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ, विभिन्न प्रकार के लेक्चर हॉल व अत्यंत मनोहर स्थापत्य कला के उदाहरण यहाँ की ईमारते आपको मुस्काते हुऐ कहती है, "मुस्कुराइए! आप भारतवर्ष के सबसे सुन्दर संस्थान में है।" हिमाचल की गोद में बसा यह संस्थान जब सन 1986 में स्थापित हुआ, तत्पश्चात ही संस्थान अपने सिद्धांत पर निश्चल रहने का प्रण लिया।

"उद्यमेन हि सिद्धान्ति कार्याणी न मनोरथैः"

अपने शुरूआती दिनों में यह संस्थान भारत सरकार व हिमाचल प्रदेश सरकार की मिली जुली परियोजना थी, अपने साथ सिविल, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक व मैकेनिकल के विभाग के साथ. समय के साथ अन्य विभाग जुड़ते गये और आज राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान कुल 15 विभाग व 2 उत्कृष्टता केंद्र के साथ विद्यार्थियों की पहली पसंद है।

चुंकि हमारा संस्थान बहुमुखी विकास की बात करता है, अतः यहाँ के कंप्यूटर सेंटर, सेंट्रल लाइब्रेरी, हेल्थ सेंटर और स्पोर्ट्स का उल्लेख आवश्यक है। इन सभी सुविधाओं के साथ संस्थान सुनिश्चित करता है कि व्यावसायिक सेवाएं, नयी टेक्नोलॉजी से परिचय व उनका परिपूर्ण उपयोग तथा स्वस्थ तन-स्वस्थ मन उनकी परिभाषा बने।

विद्यार्थियों का निवास स्थान, उनका हॉस्टल भी काफी अहम है. 4 गर्ल्स व 9 बॉयज हॉस्टल ; ये बस रहने की जगह नहीं, वहाँ उनकी कई स्मृतियाँ बसती है, जो आजीवन उनके चेहरे पर मुस्कान बिखेरती रहती है. हॉस्टल में रहने का उत्साह और भी ऊर्जावान हो उठता है जब उन्हें खबर होती है हॉस्टल के उच्च गुणवत्ता वाले भोजन, साफ पानी व पूर्ण हॉस्टल की स्वच्छता व सुरक्षा पर. यहां बिताए चार पांच साल विद्यार्थियों के जीवन की दूरी बदलने की क्षमता रखते हैं।

संस्थान का कैंपस भी स्वयं में अनेक कहानियां समेटे खड़ा है। जंक्शन के पराठे, एकता कैफे की बहार, जूस बार की मस्ती और स्टूडेंट पार्क की वह नरम नरम घास, यह सब मिलकर आपको मोह जाल में बांधने को आतुर खड़े हैं। संस्थान अपने उचित वातावरण से सुनिश्चित करता है कि विद्यार्थीगण सदा स्फूर्तिवान रहे।

प्रत्येक वर्ष हजारों विद्यार्थी यहां सुनहरे भविष्य के सपने संजोए आते हैं। प्रत्येक वर्ष हजारों विद्यार्थी यहां अपने सपने पूरे कर देशहित में निहित हो जाते हैं। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान ना सिर्फ विद्यार्थियों के कोमल मन को चहुमुखी विस्तार के लिए मार्गदर्शन करता है अपितु उन्हें देश प्रेम की भावना से ओतप्रोत भी करता है।

वास्तव में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान हमीरपुर राष्ट्रहित में योगदान देने में सर्वोपरि है।

# त्रिशूल एक परिचय

'त्रिशूल' राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हमीरपुर की वार्षिक हिंदी पत्रिका है। त्रिशूल का यह छठा संस्करण है। यह भी पूर्णतया हिंदी भाषा को समर्पित है। यह संस्करण खुद में अनोखा है, क्योंकि यह कोरोना महामारी के काल में प्रकाशित हो रहा है, जब सभी से सामाजिक और शारीरिक रूप से दूरी बनाए रखने की बात कही जा रही है। त्रिशूल के इस संस्करण के माध्यम से संस्थान के अध्यापक, अध्यापिकाएं, छात्र एवं छात्राएं अपने मन के भावों, विचारों और अनुभवों को एक दूसरे तक पूर्व की भांति पहुंचा सकेंगे।

विचारों को समाज का दर्पण कहा जाता है। विचारों के द्वारा ही समाज के सुख-दुःख, आशा-निराशा, साहस-भय, उत्थान-पतन और वेदना आदि मनोभाव प्रतिबिंबित होते हैं। त्रिशूल इन्हीं विचारों को प्रकाशित करने का एक माध्यम है। यह संस्थान के लोगों के साथ जुड़ कर उनकी विभिन्न धारणाओं एवं अन्य परिस्थितियों से अवगत कराती है। परिस्थितियां लोगों की चित्तवृत्ति को बदलती हैं और इनके बदलने से साहित्य के स्वरूप में परिवर्तन होता है। त्रिशूल इस बदलते स्वरूप का संयोजन है।

समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करने का एक सशक्त माध्यम साहित्य है। यह समाज में प्रबोधन की प्रक्रिया का सूत्रपात करता है, लोगों को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और साथ ही लोगों का मार्गदर्शन करता है। दरअसल, साहित्य इसी समाज का आईना है जो साहित्यकार, लोगों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। रचनाएँ समाज की धार्मिक भावना, भक्ति, समाजसेवा के माध्यम से मूल्यों के संदर्भ में मनुष्य हित की सर्वोच्चता का अनुसंधान करती हैं। त्रिशूल में प्रकाशित हर संदेश, कहानी, कविता, लेख समाज के नवनिर्माण में पथप्रदर्शक की भूमिका निभाते हैं और एक नई दृष्टि को दर्शा कर हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं को आपस में जोड़ते हैं।



## प्रो. ललित कुमार अवस्थी

निदेशक, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान हमीरपुर

हमारी राजभाषा हिंदी में हमारे देश भारत की सभ्यता -संस्कृति, जनजीवन एवं विविधता की झलक बड़े ही सहजता से देखी जा सकती है। यह भारत की जनता को एक सूत्र में बांधती है। इसके साहित्य सागर में गोता लगाकर कोई भी हमारे देश एवं यहाँ के जीवन को जान सकता है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि संस्थान की हिंदी समिति द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिका "त्रिशूल" के छठे संस्करण का प्रकाशन होने जा रहा है। यह पत्रिका अपने भावपूर्ण एवं रोचक संकलन से पाठकों में हिंदी के प्रति रुचि पैदा करेगी। यह संस्थान की चिंतन शैली एवं विचारों को प्रवाहित करने में भी मदद करेगी। मैं इस संकटकाल में हिंदी समिति के सदस्यों के उत्साह लगन एवं परिश्रम की सराहना करता हूँ। मैं "त्रिशूल" के छठे संस्करण के सफल प्रकाशन के अवसर पर हिंदी समिति को हिंदी के प्रति समर्पण एवं प्रचार प्रसार के लिए शुभकामनाएँ एवं धन्यवाद देता हूँ।



## डॉ. योगेश गुप्ता

कुलसचिव, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान हमीरपुर

हिंदी हमारी मातृभाषा एवं राजभाषा दोनों ही हैं। जनसाधारण के द्वारा दैनिक जीवन में उपयोग में आने के कारण यह एक महत्वपूर्ण भाषा बन गई है। किसी भी भाषा के प्रचार-प्रसार में उस भाषा में प्रकाशित पत्रिकाएँ अत्यंत ही महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। ये पत्रिकाएँ उस भाषा के प्रति लोगों की रुचि में वृद्धि करती हैं। मुझे अत्यंत गर्व हो रहा है कि हमारे संस्थान की 'हिंदी समिति' हिंदी को को समर्पित पत्रिका 'त्रिशूल' के षष्ठम संस्करण को प्रकाशित करने जा रही है। इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं अंत ही पठनीय, रोचक तथा शिक्षाप्रद हैं। मेरा यह विश्वास है कि इस पत्रिका में समाहित रचनाओं की विविधता, रोचकता एवम् ज्ञानवर्धक सामग्री इसे एक सफल पत्रिकाओं की सूची में स्थान दिलाएगी और पाठकों के मन हिंदी की रचनाओं के प्रति एक नई उमंग पैदा करेगी।

मैं इस अवसर पर उन सभी छात्रों को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस पत्रिका को अपनी बहुमूल्य रचनाएँ भेजीं। मैं इस पत्रिका की प्रकाशन समिति को हृदय से धन्यवाद तथा शुभकामनाएँ देता हूँ।





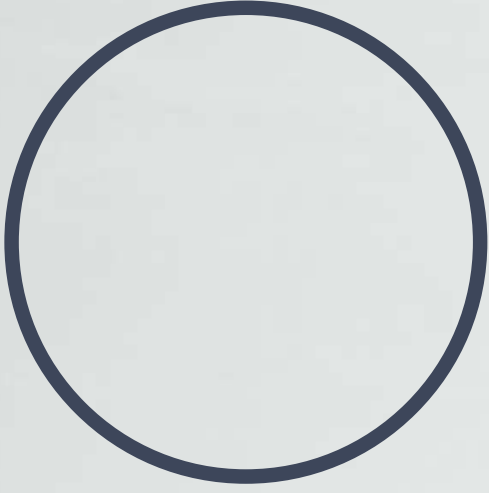
## नितिन पालीवाल

हिंदी राजभाषा अधिकारी, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान हमीरपुर

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान हमीरपुर की हिंदी पत्रिका त्रिशूल का छठा संस्करण आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करना हिंदी भाषा प्रकोष्ठ के लिये अत्यंत गर्व एवं सम्मान का विषय है। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है। भारत जैसे विशाल देश में जहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं वहाँ हिंदी का एक अपना अलग ही स्थान है। इंटरनेट, मोबाइल, व्हाट्सएप, फेसबुक आदि में हिंदी का प्रयोग इसकी शक्ति, सहजता एवं व्यापकता को दर्शाता है।

हिंदी भाषा के विकास में हम सभी की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि हम हिंदी भाषा का प्रयोग करेंगे, तभी हमारी भावी पीढ़ी भी हिंदी का प्रयोग कर सकेगी। इस पत्रिका का उद्देश्य संस्थान के हिंदी साहित्यकारों की रचना को प्रकाशित करते हेतु एक मंच प्रदान करना है ताकि उनकी प्रतिभा को पुष्पित एवं पल्लवित किया जा सके। किसी भी पत्रिका की सफलता उसमें समाहित रचनाओं की विविधता, रोचकता एवं ज्ञानवर्धक सामग्री पर निर्भर करती है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका इस कसौटी पर खरी उतरेगी एवं आप सभी को बहुत पसंद आएगी। मुझे विश्वास है कि, आप सभी प्रतिक्रियाओं तथा सुझावों के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन करेंगे, ताकि आगामी अंकों को और अधिक रोचक तथा ज्ञानवर्धक बनाया जा सके।

हिंदी भाषा प्रकोष्ठ, इस पत्रिका के लिए रचनात्मक सहयोग एवं संपादन सहयोग देने वाले सभी कर्मचारियों तथा छात्र-छात्राओं का विशेष रूप से आभारी है जिनके परिश्रम से ही इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका है।



## डॉ. सिद्धार्थ

केंद्रीय अधिकारी, हिंदी भाषा प्रकोष्ठ,  
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान हमीरपुर

मैं प्रशाशकों को "त्रिशूल" के छठे संस्करण के प्रकाशन अवसर पर बधाई देता हूँ। वर्तमान में युवाओं/संस्थान के छात्रों को हमारी मातृभाषा हिंदी के महत्व का बोध होना बहुत आवश्यक है, क्योंकि मातृभाषा होने के कारण हिंदी हमें हमारी संस्कृति एवं सभ्यता से जोड़े हुए है। मेरे विचारों में हिंदी समिति का यह कार्य बहुत ही सराहनीय है, क्योंकि "त्रिशूल" सभी छात्रों, अध्यापकों एवं संस्थान के अन्य सदस्यों को एक विशिष्ट मंच प्रदान करती है, जहाँ वो अपने विचारों को साझा कर सकते हैं।

हिंदी का अध्ययन देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी किया जा रहा है। हिंदी भाषी क्षेत्रों का दायरा व्यापक और विस्तृत होता जा रहा है, जिसमें संभावनाएं असमान्य रूप से बढ़ती जा रही है। ऐसे में राष्ट्रीय स्तर के संस्थान होने के नाते हमारा दायित्व है कि हम सब हिंदी के विकास के लिए कार्यरत रहें।

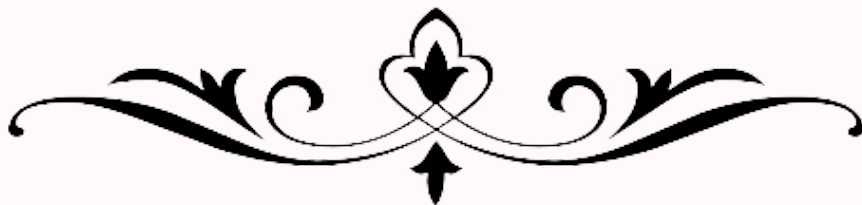
मेरा मानना है कि, समिति का यह कार्य संस्थान में हिंदी के विकास के लिए प्रभावी होगा एवं मैं इसकी सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

# विषय सूची

प्रकृति और मनुष्य की वार्तालाप .....	
माँ की ममता .....	
प्रवासी .....	
आगे बढ़ ! .....	
नैतिकता .....	
नई पाठशाला .....	
गुफ्तगू .....	
वो .....	
दृष्टिकोण .....	
माता-पिता .....	
वेब सिरीज़ रिव्यू: हल्की फुल्की पंचायत .....	
लड़कियों के नाम .....	
दोषी कौन .....	
ये जग और कुछ भी नहीं, कान्हा तेरी बँसी की धुन है रे .....	
यात्रा वृत्तांत .....	
ये वक्त नहीं खराब .....	
मन को कचोटता है 'पराया धन' का तगमा .....	
मेरी माँ .....	
नए लोग वही पुरानी ख्वाहिशें .....	
नीरस हो रहा जीवन मेरा .....	
चार साल बेमिसाल .....	
पगडंडियों का सफर .....	
ख्वाहिशों के पत्रों में मेरा कॉलेज .....	



बाद में चर्चाएं होंगी .....  
पिता : एक समुन्दर .....  
मेरा मौसम .....  
अभ्युदय .....  
मौन ही शक्ति .....  
बचपन .....  
इंटरनेट .....  
पथिक .....  
छोटी सी बात .....  
प्लस टू .....  
चलो कुछ तूफानी करते हैं .....  
यह नया वक्त वह पुराना ख्याल .....  
माँ .....  
ज़हर .....  
हिंदी साहित्य की एक झलक .....  
निष्कर्ष : कुछ खोया कुछ पाया .....  
साक्षात्कार .....



# प्रकृति और मनुष्य

प्रकृति और मनुष्य के बीच बहुत गहरा संबंध है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। मानव जीवन को पर्यावरण प्रभावित करता है और, मानव भी पर्यावरण को प्रभावित करता है। मनुष्य लगातार प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। प्रकृति में मनुष्य जो कचरा भर रहा है, उसे वह किसी भी दिन बाढ़, भूकम्प के रूप में निकाल देती है। प्रकृति मानव की चिर सहचरी रही है। मनुष्य आज स्वार्थ वश उसके संतुलन को बिगाड़ रहा है जो भावी पीढ़ी के लिए घातक है। हम कह सकते हैं कि प्रकृति से मनुष्य का सम्बन्ध अलगाव का नहीं है, प्रेम उसका क्षेत्र है। सचमुच प्रकृति से प्रेम हमें उन्नति की ओर ले जाता है और इससे अलगाव हमारे अधोगति के कारण बनते हैं। इसी सन्दर्भ में आपके समक्ष मनुष्य का प्रकृति से वार्तालाप प्रस्तुत है।

इस कोरोना काल में मनुष्य अपने घर एवं ऑनलाइन कार्यों में उलझ कर रह गया है, तो चलिए देखते हैं कैसे मनुष्य सड़क पर चलते चलते अपने आप से गुनगुनाते हुए कैसे वह प्रकृति से मिलता है और उससे क्या क्या सीख लेता है।

**मनुष्य:** मैं इस जीवन से पूरी तरह तंग आ चुका हूं। रोज का लॉकडाउन कभी बाढ़, कभी तूफान, कभी चक्रवात। इन सभी ने मेरे जीवन को नरक समान बना दिया है।

**प्रकृति (गुस्से में):** है दुष्ट मानव! क्या आज से पहले लोग इस पृथ्वी पर नहीं जीते थे। क्या आज ही सारी समस्या पैदा हुई है ?

**मनुष्य :** तो हम कर भी क्या सकते हैं, इतनी जनसंख्या इस पृथ्वी पर निवास करती है तो जीवन निर्वाह के लिए हमें कछ ना कछ तो करना पड़ेगा।

**प्रकृति :** हे मानव! तेरा हमेशा से यही बर्ताव रहा है। तूने क्या कभी किसी दूसरे के लिए कुछ सोचा है तूने हमेशा अपनी परवाह की है। तुझे तो अपना जीवन भी सही से जीना नहीं आता।

**मनुष्य :** जो तुम इस आदर्श जीवन की बात कह रहे हो, तो क्या हम जीना ही छोड़ दे?

**प्रकृति:** अरे तू जो आज इस जीवन की बात कर रहा है ना ये मत भूल कि ये जीवन भी तुझे हमने ही प्रदान किया है।

# की वार्तालाप

**मनुष्य :** माना की देन है तुम्हारी  
पर तुमने किया ही क्या है  
इस जीवन को तो हमने ही  
सदा आगे बढ़ाया है  
और बात ही क्या बल बुद्धि के दम पर  
हमने ही तो आग से हवाईजहाज बनाया।

**प्रकृति:** बिना सोचे समझे इस कदर जनसंख्या को बढ़ाओगे तो  
एक दिन बिना भोजन और पानी के मर जाओगे।  
हे मानव, तू प्रकृति और अपने में समन्वय स्थापित  
करके भी तो जीवन का निर्वाह कर सकता है।

**मनुष्य:** अरे हम समझ ही गए कि गलती तो हमारी ही है जिसने इस प्रकृति को बिना  
दोष मारी है। हमने ही पशु पक्षियों के घरों को छीना है। हमने ही सुंदर नदियों को गंदगी  
से बीना है। हमने ही तो से स्वच्छ हवाओं को प्रदूषित किया है। बिना बात ही इस पृथ्वी  
को हमने दूषित किया है।

**प्रकृति :** अरे मनुष्य! तू अभी उस अज्ञानी की तरह है जो पेड़ की उस डाल  
पर बैठकर ही उसी डाल को काट डालता है। यह मानव जीवन को पर्यावरण  
प्रभावित करता है और आज तो मानव ही पर्यावरण को प्रभावित कर रहा  
है। इसलिए हे मानव तू आज को समझ और संभल जा क्योंकि अगर सुबह  
का भूला अगर शाम को घर आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते।

**मनुष्य :** आखिर यह हम जान ही गए हैं कि हम अपने ही अहंकार में  
थे और यह भी भूल गए थे कि इस मानव शरीर को अंत में इसी मिट्टी  
में मिल जाना है। किसी ने सही कहा है मिट्टी में मिट्टी मिले खो के  
सभी निशान, किसमें कितना कौन है कैसे हो पहचान।

**प्रकृति :** हे मानव! तू ही तो है जिसने आज इस पृथ्वी  
को संवारा है। अभी भी समय है अपने इस  
विनाशकारी कार्यों पर रोक लगाकर सुख का जीवन  
भोगो। आखिरकार मनुष्य एवं प्रकृति में वह प्यार का  
गठबंधन है जोकि इस संसार को आगे ले जाने का  
पुण्य एवं महत्वपूर्ण कार्य करने में सक्षम है।





## माँ

-वेणु श्री  
सहायक अध्यापिका  
वास्तुकला विभाग

सृजन, मोह, संस्कार, सचेतन, भावों की  
चालीसा है।  
कठिनाई है ग्रीष्म ऋतु और मीठी पुरवाई  
माँ।।

निज अस्तित्व लुटा कर ये, बूंदों को  
सागर कर देती।  
मेरी चिंता में खोई सी, दीवानी सी  
लगती माँ।।

आशीर्वाद की पतवारों से, तूफ़ानों को  
मोड़े हैं।  
घेरे कभी बलाएं जो, डाल सदा हो  
जाती माँ।।

तेरे आँचल से उठ कर, खुद माँ बन  
कर जाना मैंने।  
तेरे सन्नाटे के भीतर, चीखों को  
पहचाना माँ।।

भेदभाव न छोटे- बड़े का, तेरी वर्ण की  
माला में।  
आधे को पूर्ण सहारा देकर, शब्दों में  
ढाले हिंदी माँ।।



## ज़हर

-आशीष कौशल  
शोधार्थी  
पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

घुट रहा है घर में कोई, तो कोई तड़प रहा  
अस्पतालों में  
हर घड़ी, हर समय, हर पहर उतरा है,  
आज हवाओं में ज़हर उतरा है।

ना दिन में चैन है ना रातों को सुकून है  
साँसों में  
असहायों की मौत बनकर तो लुटेरों के  
लिए मैहर उतरा है,  
आज हवाओं में ज़हर उतरा है।

दोष खुदा को दूँ या कोसूँ इंसानों को  
ना जाने किस वजह से धरती पर ये कहर  
उतरा है,  
आज हवाओं में ज़हर उतरा है।

कर लो हिफाज़त ढक कर चेहरा और  
धोकर अपने जिस्म को  
कौनसा ये ज़ुल्म सिर्फ़ सहर उतरा है,  
आज हवाओं में ज़हर उतरा है।

पहर- पूरे दिन-रात का आठवाँ भाग  
मैहर- कृपा  
कहर- विपत्ति  
सहर- सुबह



# मौन ही शक्ति

-निखिल शर्मा

जब मन अविश्वास से दुर्बल हो उठे तब मौन ही शक्ति देता है।

कभी आपने सोचा है कि जो लोग अधिक बात करते हैं उनसे हम कतराने क्यों लगते हैं ? उसका मतलब यही होगा कि अमुक जो कुछ बोल रहा है उसे हम सुनना नहीं चाहते। शताब्दियों से लोग सुनने के उत्सुक रहे हैं। और इस दिशा में सबसे अधिक उपलब्धि हुई है उन कवियों की जो इधर सृष्टि का निखिल मौन संगीत सुनते रहे। प्रेमिका का मूक स्वरो में अनुरोध भी सुना है, वाल्मीकि भी कभी मौन थे। व्यथा के तीखे शब्दों से तिलमिला कर अचानक उनका कंठ फूटा। सुनना एक ही क्रिया के दो भाग है अपने में अलग-अलग परन्तु ये संपूर्ण नहीं है। किंतु आज कितने ही लोग बोलना चाहते हैं, पर उन्हें बोलने नहीं दिया जाता और लोग उन्हें सुनना चाहते हैं पर सुन नहीं पाते, कितने ही लोग बोलते हैं और उन्हें कोई सुनता नहीं, कितने ही लोग सुनना नहीं चाहते पर उन्हें सुनना पड़ता है। बोलना सुनने से कुछ बड़ा होते हुए भी नितांत सुनने पर आश्रित है कोई आपसे कुछ कह रहा हो और आप सुन न रहे हो तो संभव है आपको अपनी अन्यमनस्कता के लिए कुछ कटु वचन सुनने पड़े।

आप बोलने वाले के ऊंचे स्थान पर भी तभी तक रहते हैं जब तक श्रोता आपको मानते रहते हैं, उनका मन द्रवित हुआ नहीं कि फिर आप फिर श्रोता बन गए। यूँ मौन रहना सुनते रहना, स्वास्थ्य दायक भी होता है। मौन व्रत रखने से व्यथा नष्ट होने वाली शक्ति संचित होती है। जब मन अविश्वास से दुर्बल हो उठे तब मौन ही शक्ति देता है। मैं मौन रहूँ तो पता नहीं किस वक्ता की अवज्ञा कर बैठूँ, मौन रहते-रहते वक्ता को यह भी लग सकता है कि आप उनकी बात नहीं सुन रहे और आपको लगने लगे कि मेरा चुप रहना ही मूर्खता की निशानी है। मौन हो जाता हूँ तो लगता है कि चारों ओर उठ रहा है एक हाहारव और अंतर्मन से उठ रहा है एक विद्रोह का रणघोष।



# दृष्टिकोण

-देवेन्द्र कुमार

“लगता है आज फिर से अंश नाराज होकर सो गया है” - ज्योति ने दरवाजा बंद करते हुए राजीव से कहा।

“मुझे लगता है ज्योति तुम्हें उसे समझाना चाहिए” अपने कमरे की तरफ जाते हुए थकावट से भरे राजीव ने कहा।

“कल अंश से बात करके मैं उसे समझा दूंगी, हमारा पेशा कुछ ऐसा ही होता है जिसकी वजह से हमें व्यस्त रहना पड़ता है” नींद से भरी ज्योति राजीव से कहे जा रही थी।

ज्योति पेशे से एक डाक्टर थी और उसके पति राजीव आईपीएस अधिकारी। अंश उनका बारह वर्ष का बेटा था जो कि उनसे नाराज रहता था क्योंकि उसके माता-पिता बहुत ज्यादा व्यस्त रहने के कारण उसके साथ समय व्यतीत नहीं कर पाते थे। उसे लगता था कि वो उसे प्यार नहीं करते।

“सॉरी बेटा अंश कल एक इमरजेंसी केस आ गया था इसलिए मैं...”

“आप दोनों हमेशा ही ऐसा बोलते हो मुझे कोई भी प्यार नहीं करता इससे अच्छा तो मैं दादा-दादी के पास ही रहता” ज्योति की बात काटते हुए गुस्से में होकर नाश्ता करते हुए अंश बोला।

“बेटा, तुम तो जानते ही हो हमारी नौकरी ही कुछ ऐसी ही है, हमें अपने परिवार से भी बढ़कर लोगों की हर संभव सेवा करने के लिए तत्पर रहना पड़ता और इसलिए ही हमने इस पेशे को चुना है” राजीव अंश को समझा रहा था।

“बाकी सबके पापा भी तो नौकरी करते हैं, उनके पास तो खूब समय होता है आप तो मुझे प्यार करते ही नहीं हो” अंश ऐसा बोलकर गुस्से में नाश्ता करे बिना ही अपने कमरे में चला गया।



“ऐसा करते हैं कुछ दिन के लिए माँ - बाबूजी को यहीं बुला लेते हैं, अंश भी अकेला महसूस नहीं करेगा”-राजीव ने झुंझलाहट में ज्योति से कहा ।

ज्योति आज काम पर जाते समय थोड़ी परेशान थी। अंश के उनके प्रति बदलते हुए रवैये को लेकर उसको डर लग रहा था कि कहीं अंश उनसे दूर ना होने लगे।

“हैलो बाबूजी , कैसे हो आप ” राजीव अपने पिताजी से फोन पर बात कर रहा था।

“बेटा, मैं ठीक हूँ। बस आजकल थोड़ा खेतों में काम ज्यादा रहता है, फसल की कटाई का समय है ना।” बाबूजी ने कहा।

“अच्छा मैं सोच रहा था”... राजीव थोड़ा हिचकिचा रहा था, उनको अंश के पास शहर बुलाने में।

“बेटा मैं सोच रहा था कि तुम कुछ दिन के लिए अंश को हमारे पास गांव छोड़ जाओ। कुछ दिन हमारे पास रहेगा तो हमारा भी मन लगा रहेगा।” वो राजीव के मनोभाव को समझ चुके थे, वो जानते थे कि राजीव - ज्योति व्यस्त होने के कारण अंश को ज्यादा समय नहीं दे पाते।

“अच्छा, अगर आप ऐसा चाहते तो ठीक है, मैं कल अंश को गांव लेकर आ जाऊंगा। वैसे भी बहुत कम आता है वो गाँव, कुछ दिन आपके पास रहेगा तो उसको भी अच्छा लगेगा।” राजीव मन ही खुश कहने लगा।

“ठीक है बेटा, खयाल रखना अपना।” यह कहते हुए राजीव के बाबूजी ने फोन रख दिया।

“ज्योति तुम शाम को घर जाकर अंश का सामान पैक कर देना, मैं सुबह उसको छोड़कर आ जाऊँगा । ” राजीव ने फोन पर ज्योति को बाबूजी से हुई सारी बात बताते हुए कहा।

आज शाम को घर जल्दी आकर ज्योति अंश का सामान पैक कर रहीं थीं और साथ में वो थोड़ी चिंतित भी थी।

“ज्योति तुम अंश को सुला दो, हमें सुबह जल्दी निकलना भी है । ” राजीव ने ज्योति से कहा।

“ठीक है पर मुझे डर लग रहा है अंश का मन तो लग जायेगा ना अच्छे से, वहाँ नेटवर्क कनेक्टिविटी ज्यादा अच्छी नहीं है और अंश अपने वीडियो गेम्स के बिना कैसे रहेगा वहाँ।” ज्योति थोड़ा परेशान होकर बोली।

“तुम परेशान मत होओ, माँ - बाबूजी के साथ उसका मन लग जायेगा।” राजीव सोने की तैयारी करते हुए बोला।

इस सबके बारें में सोचते ज्योति को नींद आ गई जोकि सुबह अलार्म की आवाज़ से खुली। ज्योति ने राजीव को जगाया और साथ ही अंश को नहलाकर तैयार कर दिया। राजीव ने अंश का सामान गाड़ी में डालते हुए अंश को चलने के लिए आवाज लगाई।

“बेटा दादा - दादी को परेशान मत करना, अपना ख्याल रखना। मम्मी - पापा आपसे बहुत प्यार करते हैं।”

“ठीक है मम्मी, बाय।” अंश ने रूखेपन से बोला और जल्दी से गाड़ी में बैठ गया, गाड़ी अब गांव वाले रास्ते पर थी। अंश ने गाड़ी के कांच को नीचा किया और देखने लगा गांव वाले रास्ते पर पड़ने वाले लहराते और मार्च की धूप में सुनहरे धान की बालियों से भरे खेतों को। अंश बहुत खुश था आज।

कुछ 4-5 घंटे के लंबे सफर के बाद वो गाँव पहुँच चुके थे। राजीव ने अंश का सामान निकाला और बाबूजी के पैर स्पर्श कर के, अपने जरूरी काम की वजह से तुरंत वापस जाने की इजाजत मांगी और शहर की तरफ गाड़ी मोड़ ली।

अंश भी सफर में बहुत थक गया इसलिए खाना खाकर दादीजी से कहानियां सुनते हुए जल्दी सो गया।

अंश को गांव आये 3-4 दिन हो गये थे और आज रात को वो दादाजी के साथ टीवी देख रहा था तभी देश में प्रधानमंत्री के द्वारा कोविड-19 के बढ़ते प्रभाव के कारण किये गये लॉकडाउन की खबर सुनकर दुःखी हुआ क्योंकि उसे अब गाँव में रहना पड़ेगा लॉकडाउन खत्म होने तक और वहां उसको वीडियो गेम्स खेलने को नहीं मिलने वाले थे। यह सोचते सोचते वो दादी जी की गोद में ही सो गया।

“अंश बेटा, चलो मैं तुम्हें अपने खेत दिखाकर लाता और वहां पर बहुत बच्चे भी हैं तुम्हारा मन भी लग जायेगा।” बाबूजी ने उसकी अंगुली पकड़ते हुए कहा।

“हाँ, दादाजी मुझे भी वो येलो क्रॉप देखनी है।” अंश ने चहकते हुए कहा।

“अरे बेटा!, उसको धान(गेहूँ) कहते हैं, चलो मैं ले चलता हूँ तुम्हें वहां !” यह कहते हुए चल दिये वो।

दो पीढ़ी एक जिंदगी के अंतिम छोर में और दूसरी जिंदगी की शुरुआत में, अंश मासूमियत भरे अनेकों सवालों और उसके दादाजी उनके जवाबों के साथ, मोटर, कुंए- कुंडो और तालाबों को देखते हुए खेतों की तरफ बढ़ रहे थे। और जैसे - जैसे वो आगे बढ़ते अंश के अनेको सवालों के जवाब मिलते जा रहे थे। अंश बहुत खुश था गांव के माहौल से अब उसको गांव आये 3-4 महीने हो चुके थे और वीडियो गेम्स के बारे में भूलकर वो अब पिट्टू, कंचे, जैसे खेल खेलने लगा था। पिज्जा-चाकलेट जिनको वो बहुत पसन्द करता था उनको भूलकर अब उसको दूध- दही, छाछ-राबडी ज्यादा मन को भाने लगे थे। साथ ही उसको गांव वालों अपनेपन का भाव दिखता था जोकि शहर के लोगों में देखने को नहीं मिलता था।

उसका नजरिया अब अपने मम्मी-पापा के प्रति बदल चुका था क्योंकि उसने मीडिया से डाक्टर और पुलिस के द्वारा किये जा रहे काम के बारे में सुना था और उससे अब अपने माता-पिता पर गर्व था।

आज लगभग एक साल बाद सब कुछ सामान्य होने के बाद उसके पापा उसे लेने आये थे, अंश ने भरी आँखों के साथ सबसे विदा ली और शाम तक वो अपनी मम्मी की गोद में था। रात को मम्मी को गांव के बारें में बताते अंश को कब नींद आ गई पता ही नहीं चला।  
ज्योति की आँखें भी अंश को खुश देकर भर आई।

## माता-पिता

ताउम्र कमाई दौलत जिसकी,  
एक पल में तुम बर्बाद किए।



धड़कन जिसकी तुम दिल में लिए,  
उनको आँसू क्यों सौगात दिए?

उनके सपनों को टुकड़े करके,  
क्यों अपने सपनों को नाम दिए?

छोटी सी दुनिया तुम थे उनके,  
तुम्हारा तस्वूर उनके  
आँखों में झलकता था,

तुम क्यों न समझ सके उनको?  
जिन्होंने हर दर्द उठाए हैं तुम्हारे  
लिए।

तुम्हारे चंद ख्वाबों को पूरा करना,  
उन्हें अपना जिंदगी  
मुकम्मल करना लगता था।।

जिनके सिर पर होता उनका हाथ है,  
खुदा उनको ही देता  
खुशियों की सौगात है।।

तुम अक्ल अजीज़ थे उनके,  
तुमने कैसे ये काम किए?

-पूर्णिमा पाण्डेय

# निष्कर्ष: कुछ खोया कुछ पाया

भारत में कोरोना के एक मरीज से करोड़ों मरीज मिलने तक के एक वर्ष की समयावधि ने हमें बहुत कुछ सिखाया है। इस एक साल के सफर में हमें देशव्यापी लॉकडाउन से लेकर वैक्सीनेशन ड्राइव तक देखने को मिला है, यदि इस लॉकडाउन की समीक्षा की जाए तो, महामारी- जिसके चलते हमने अपनो को खोया है, लॉकडाउन, जिसने हमें बेरोजगारी की चरम सीमा दिखाई है। अर्थव्यवस्था में गिरावट का अनुमान तो अर्थशास्त्रियों में पहले से लगा लिया था जिसके चलते वित्तीय वर्ष 2020 - 2021 में भारत की जी.डी.पी. में भी गिरावट दर्ज की गई।

इन सब की शुरुवात 27 जनवरी 2020 को हुई जब केरल प्रांत में भारत का पहला कोरोना मरीज मिला। 11 मार्च 2020 को डब्ल्यूएचओ द्वारा इस वायरस को विश्वव्यापी महामारी घोषित किया गया। 19 मार्च, प्रधानमंत्री मोदी ने अपने 30 मिनट के लाइव संबोधन में 22 मार्च को सुबह 7:00 से साय 9:00 बजे तक जनता कर्फ्यू का अनुरोध किया था और 5:00 बजे अपनी घर की छतों तथा बालकनी में हमारे स्वास्थ्य कर्मियों, डॉक्टर की सराहना तथा उनके उत्साहवर्धन के लिए तालिया, थाली चम्मच बजाने के लिए कहा। 24 मार्च, को प्रधानमंत्री मोदी ने 21 दिनों की अवधि के लिए देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की तथा 20 लाख करोड़ की वित्तीय राहत धन राशि की घोषणा की।

कोरोना वायरस ने संपूर्ण विश्व को गहरा झटका दिया है। भारत की बात की जाए तो कोरोना के चलते आयात तथा निर्यातसेवाओं में कमी आई है, यही कारण है कि उद्योगों को मिलने वाले कच्चे माल की उपलब्धता में कमी आई है जिसके चलते लघु तथा बड़े उद्योगों की या तो उत्पादन क्षमता आधी हुई है या फिर उद्योगों पर ताला लग गया है। लॉकडाउन के चलते पर्यटन भी काफी प्रभावित हुआ है, देश के बहुत से ऐसे राज्य हैं जिनका आय का मुख्य स्रोत पर्यटन था ऐसे राज्यों के लोगों को अपनी आय का दूसरा स्रोत ढूंढना पड़ा, या फिर बेरोजगार होना पड़ा। लॉकडाउन का मुख्य असर उन मजदूरों पर पड़ा जो अपना जीवन यापन प्रत्येक दिन मिलने वाले दैनिक भत्ते से चलाते थे ऐसे प्रवासी मजदूरों को रोजगार ना मिलने के कारण अपने-अपने राज्य लौटना पड़ा।



हमें इस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि हमसे भूल कहाँ हुई ताकि भविष्य में उन गलतियों को दुबारा न दुहराएँ। लॉकडाउन के दौरान प्रवासी मजदूरों की घर वापसी का सही इंतजाम न होने के कारण इसका विपरीत प्रभाव संपूर्ण देश ने देखा, देश के कई हिस्सों से लॉकडाउन की उलंघन की खबरे भी साल भर आती रही जिन क्षेत्रों में कोरोना के मरीज ज्यादा मिले हैं वहाँ कहीं ना कहीं इसका कारण लोगों द्वारा की गई लापरवाही ही रही है। इस देशव्यापी संकटकाल में भी कुछ लोगो ने दवाइयों तथा आवश्यक मेडिकल उपकरणों की कालाबाजारी जैसे अमानवीय कार्य किए हैं, देश ने देखा कि कैसे थोड़े से लाभ के लिए कुछ स्वार्थी लोग, देशवासियों की साँसों से खेलते हैं।

इस वायरस ने हमसे हमारे कई रिश्तेदार, डॉक्टर, स्वास्थ्यकर्मी, फिल्म जगत, उद्योग जगत तथा संगीत जगत के बहुत से लोगों को हमसे छीन लिया है। कई लोग इस बीच डिप्रेशन तथा मानसिक बीमारियों का शिकार भी हुए। सकारात्मक प्रभाव देखा जाए तो इस एक वर्ष के ऊपर कि इस लॉकडाउन अवधि में डॉक्टर, स्वास्थ्यकर्मियों तथा देश के सैन्य, अर्धसैनिक बलों ने पूरी निष्ठा से अपने कर्तव्य का निर्वहन किया। लॉकडाउन में वास्तविक दुनिया की कुछ नायक सामने निकल कर आए हैं उन्होंने अपनी चिंता ना करते हुए लोगों की हृदय से मदद की है तथा इससे लोगों को एक बात समझ में आई है कि मानवता का कोई

धर्म नहीं है। पर्यावरण के लिए यह लॉकडाउन वरदान बनकर सामने आया है। वाहनों की आवाजाही में कमी तथा कई फैक्ट्रियों के बंद होने के कारण वायु की शुद्धता में बढ़ोतरी देखी गई है।

भारत में कोरोना महामारी के खिलाफ 2 टीका विकसित की गई है – कोवैक्सीन व कोविशिल्ड। शुरुआती चरणों में कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा टीका के विरुद्ध अफवाह फैलाई गई हालांकि बाद के चरणों में इनका खंडन हुआ।

कोरोनावायरस के कारण लगने वाला लॉकडाउन ने हमारे देशवासियों की धैर्य की परीक्षा ली है। जैसे हर अंधेरी रात के बाद सूर्य की किरणें पूरे विश्व को प्रकाशित कर देता है, उसी तरह इस रात का भी एक उज्ज्वल सवेरा होगा।

आशा है कि हम सभी सावधानी बरतेंगे तथा सरकार द्वारा जारी की गई गाइडलाइन का पालन करेंगे और हमारे तथा सरकार के प्रयासों के चलते जल्द ही हम सभी इस महामारी पर विजय पाएंगे।



# माँ की ममता

-अभी खंडेलवाल

जज्बातों से लड़ना तो मुझे  
मेरे हालातों ने सिखा दिया,  
लेकिन इस नादान परिंदे को  
आसमान में उड़ना माँ ने ही सिखाया।

मैंने कई दफा नादानियों में  
उसका दिल भी दुखाया,  
लेकिन उसके नाराज होने के बजाय  
उसका प्यार ही पाया।

बचपन में उंगली पकड़कर  
मुझे चलना सिखाया ,  
खुद भूखी रहकर मुझे  
प्यार भरा निवाला खिलाया।

भले ही गूगल मैप ने लोगों को  
सड़क मार्ग दिखलाया,  
लेकिन जिंदगी जीने का सही मार्ग  
मुझे माँ ने ही दिखलाया।

आँसू आने पर सबसे पहले  
माँ का पल्लू ही आगे आया ,  
गलत काम करने पर मुझे  
हमेशा सही मार्ग दिखाया।

जितना लिखूँ उतना ही कम है,  
माँ पर बस इतना ही कहना चाहता हूँ,  
मुझे जीवन जीना  
मेरी माँ ने ही सिखाया।

अक्सर कई दफा माँ को  
मुझ पर जायज गुस्सा भी आया,  
लेकिन फिर मुझे रोता देख  
उसका दिल भर आया।







## पगडंडियों का सफर

~डॉ. प्रकाश चौधरी  
सहायक अध्यापक ,  
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

ज़िन्दगी प्रगति की तेज़ रफ़्तार हो गयी,  
पगडंडियो से निकली, सड़कों पर बेहाल हो  
गयी...

पनपते थे जहा रिश्तों के आँचल में हम,  
शहर में आये, तो सिमट के बस इतवार हो  
गयी...

कंधो पर बैठ के देखते थे जिसके रंग मेलों का,  
वो बैसाखी भी, इस पर बढ़ता भार हो गयी...

गुज़रता था जहा पूरा दिन एक पीपल की छाँव  
में,  
दोपहर क्या रुकी, लगा की जैसे रात हो  
गयी...

तैरता था जहाँ हर एक शख्स दिल-ए-समंदर  
में,  
भीड़ का हिस्सा हुए, परछायी भी गुमनाम हो  
गयी...

ठहरे जब दो पल सुकून लेने को तो इल्म हुआ,  
सारी जायदाद तो, रास्ते में ही नीलाम हो  
गयी....

ज़िंदगी पगडंडियों से निकली.....



## पिता: एक समुंदर

-डॉ. निधि गुप्ता  
सहायक अध्यापिका  
गणित एवं वैज्ञानिक संगणक विभाग

खो जाती हूँ जब हर शाम यूँ ही आती,  
मैं समुंदर किनारे इस अजनबी शहर जाती।

तेरा विकट रूप समझने का करती जतन,  
तुझमें कैसे समाए ये चंचल अस्थिर मन।

पिता तेरे जैसा कोई उपहार नहीं,  
संकट हरने का दूजा कोई औज़ार नहीं।

दिखाई तूने दुनिया यूँ खोल कर आसमाँ,  
गहराइयाँ दी जड़ों को सींच कर ये जहाँ।

समुंदर ही आकाश को एक छोर मिलाता,  
तू ही आदि और अंत का साक्षी बनता।

शांत गम्भीर स्वभाव तेरा है मुझे सिखाता,  
शोर है खामोशियों का जो तूफ़ान सा गुँजता।

दरियाओं को समाता तू अपने में कुछ  
ऐसे,  
भूली हुई दिशाओं को मिलता नव जीवन  
जैसे।।



# प्लस टू

-ऋतु कुमार

अच्छा, ऐसा लगता है ना दसवीं पास करने के बाद जैसे शरीर में कोई न्युक्लियर फ्यूजन हुआ हो या फिर जैसे दुनिया थोड़ी सी बड़ी हो गई हो, थोड़ा सा मेकओवर हो गया हो उसका। भाई, मुझे तो लगता था और अभी भी लगता है कि दसवीं के बाद अचानक से मेरे शहर का विस्तार हो गया था।

तो, मोहल्ले भर में दसवीं की मिठाई बाँटने के बाद गुड्डन दीदी की अनमोल सलाह के साथ हम चले +2 में प्रवेश लेने। दीदी ने तो साफ कहा था, "बस तू ढंग का कोचिंग ढूँढ ले, एक गर्लफ्रेंड और दो चार टपरी वाले दोस्त, फिर तो बेटा बस ऐश ही ऐश है। बस +2 पास कर जा, फिर तो दुनिया कदमों में होगी।"

दीदी की आखिरी बात, "दुनिया कदमों में होगी" नहीं, ये वाली बात नहीं, "फिर तो ऐश ही ऐश है", घर कर गया दिल में। तो फिर क्या था, हम भी चल पड़े। पैरों में नये वाइट स्नीकर, उस वक्त नया नया ही ये ट्रेंड चला था, जीन्स और टी-शर्ट और नया नया स्काईबैग का बैग। वैसे हम बस कोचिंग ढूँढ़ने जा रहे थे, नामांकन तो पुराने वाले स्कूल में ही होना था।

फिर चार-पाँच जगह डेमो क्लास लेने के बाद, हफ्ते भर में हमने दो साल पढ़ने का ठिकाना ढूँढ लिया। फिजिक्स, सुबह 6:30 - 7:30, मैथ्स +केमिस्ट्री, शाम में 4-6:30, लाइफ सेट ही हो रही थी समझो।

बस समझो; ऐसा हुआ नहीं था हो जाता, गर वो दिखी न होती।

उसे पहली बार किसी डेमो क्लास में देखा था। अब क्योंकि डेमो क्लास थी तो ज्यादा ध्यान नहीं दिया। पर अचानक एक दिन फिजिक्स वाले क्लास में भी दिखी, और फिर धीरे धीरे हमारी तीनों क्लासेज सेम हो गये।

.....

अच्छा, ऐसा कई बार होता है ना कि हम प्लान करते हैं कि ये काम तो कभी करेंगे ही नहीं, पर फिर आता लाइफ का एक टर्निंग पॉइंट, वहाँ आके सब टर्न हो ही जाता है।

हमने भी कसम खाई थी के ये प्यार वगैरह से वैसे ही बच के रहना है, जैसे अब तक बचते आये हैं सच! आज तक इश्क़ का बुखार चढ़ा नहीं था, आज तक किसी को जानने के लिए ऐसे बेचैन नहीं था। पर कुछ चीज़ें जिंदगी में पहली बार भी तो होती है और वो वही बताने आई थी।

वो ना थोड़ी अजीब सी थी। बाकी लड़कियों से तो काफी अलग. साँवला रंग, खिलखिलाती हँसी और अलग लेवल की तेज़

मतलब सर बता रहे कि ऐसे निकलेगा, और उसका सेंटर ऑफ़ मास के बीच में टोक देना, "सर ये तो लॉजिकल तरीके से भी बन सकता था, इंटीग्रेशन करने की क्या ज़रूरत है? " और लॉजिक! क्या बताऊ, इस लॉजिक के चक्कर में कितनी बार हम भिड़े थे।

तो बाल की खाल ये कि पसंद तो बिल्कुल नहीं आती थी, पता नहीं क्यों? शायद फिजिक्स टेस्ट में उसके 97 थे और इधर हजरात के 95, या फिर शायद मैथ्स वाले सर जब गलती से भी कोई गलत स्टेटमेंट दे देते तो लगती थी उसे करेक्ट करने।

पर पता नहीं क्यों होते -होते ये, थोड़ी सी अच्छी भी लगने लगी थी. अब उसकी बचकानी आदतों से उतनी चिढ़ नहीं होती थी, सिवाए वो पेड़ों पर लगे बिल -बोर्ड देख कर उनका मज़ाक बनाने के। ये वाली आदत अभी भी पसंद नहीं थी।

पर उसे शायद पता भी ना था इन सब के बारे में, हमारी तो एक दफा बातचीत भी ना हुई थी, अभी तक। ख्याल आता था कि कभी उसके बगल वाली चेयर पर बैठ उसे देखूँ, कैसे करती है वो परम्यूटेसन के प्रॉब्लम, क्या बनाती रहती है वो बीच क्लास में कॉपी के अंतिम पन्ने पर और वो तिल, जो उसके गाल पर दिखता है, वो कांगजेनीटोयल है या डिस्लेप्टीक, पर एक तो कभी हिम्मत ही नहीं हुई और दूसरा वो लेट ही आती थी हमेशा, तो उसकी सीट सर के पास ही रहती थी।

फिर, मैथ्स वाले सर ने बम फोड़ा, " मंडे को टेस्ट है, फुल सिलेबस !" अब क्योंकि मार्च में पेपर्स भी थे, तो फुल सिलेबस वैसे भी थोड़ा बहुत हाथ में था। पर उस टेस्ट के दौरान पहली बार हमारी बातचीत हुई।उसके पीछे ही जगह मिली थी। उसने अचानक ही कहा , ये लिमिट वाला 7 नंबर, क्वेश्चन गलत है ना? नाट डिफाइन होगा। देखा तो सच में गलत था। तो फिर उस दिन पहली बार बात हुई, पहली बार हम सर से लड़े और पहली बार एक साथ हँसे भी। सच बताऊ, अच्छा लगा और उम्मीद भी जगी थी के अब बातचीत हो, रेगुलर।  
शायद..

.....

कहीं पढ़ा था, होना है होकर ही रहेगा और वो होता है क्योंकि वही होना होता है, इसलिए नहीं के वही होना चाहिए बल्कि इसलिए क्योंकि वही हमारा लिए अच्छा होता है ।

हाँ, वो बातचीत टेस्ट के साथ ही खत्म भी हो गयीं। जाते वक्त उसने कहा था वैसे, " टेस्ट में स्कोर सही रहा तो मोमो खाने चलेंगे" पर ना उस टेस्ट का रिजल्ट आया, ना ही मोमो। अब 11th का रिजल्ट, रद्दी के भाव तो बिकता है। हमारा मोमो भी उधर ही बिक गया कहीं।

फिर आया बड़ा साल, +2 जिसे सच में कहते हैं। अरे, फिजिक्स - केमिस्ट्री के तो दो पार्ट थे ही, मैथ्स के भी आ गये। साल के स्टार्ट में ही सबने कह रखा था, ये एक साल पढ़ लिए, तो बेटा ऐश ही ऐश है, बस तो फिर क्या था, ऐश के पीछे लग लिए.

इस साल कोई डिस्टर्ब ना करे, इसलिए फ़ोन साइलेंट पर होने लगा था। किताबें ज़रा सी और कॉपियाँ बहुत ज्यादा ही मोटी होने लगी थी। जहाँ जाओ वहाँ सब यही कह रहे, बस एक साल पढ़ ले बेटा, बस एक साल। अरे! टपरी पर घूम रहा, पढ़ेगा कौन? मूवी जाना है, पढ़ाई कौन करेगा फिर? मानो पढ़ाई ना हुई, कोई गर्लफ्रेंड हो गयीं, कि एक दिन बात ना हुई तो गुस्सा जाएगा।

पर कुछ बुरा तो कुछ अच्छा भी होता था, जैसे वो अब ज्यादा हँसती थी, थोड़ा देख भी लेती थी पीछे मुड़कर, जब स्टुपिड क्वेश्चन हमारे मुँह से निकलते थे। सर अब हम दोनों का नाम साथ में लेने लगे थे। आखिर कोचिंग के नेक्स्ट बैच के लिए हम दोनों ही इंस्पिरेशन बनने वाले थे। केमिस्ट्री शायद कमजोर हो रही थी उसकी, पर फिर भी टक्कर देती रहती थी।

फिर आया टीचर्स डे!

कसम से, आज तक उसके लिए इतना एक्साइटेट नहीं हुआ था कभी। आखिरी साल, आखिरी टीचर्स डे, तो चार दिन पहले ही बता दिया गया क्लास भर को, इस बार 200₹ लगेगा। पेप्सी, समोसा, बर्गर, मिक्सचर, सब करना था, और सर को गिफ्ट भी देना था।

और जब सब हुआ, तो भाईसाहब, देखने वाले देखते रहे गये । एक दफा ख्याल आया कि इवेंट मैनेजमेंट कर ही लिया जाए अब। खैर, फिर म्यूजिक लगा, थोड़ा डांस हुआ और थोड़ी फोटोग्राफी और एक दो फोटो में तो वो बगल में ही थी एकदम, उसकी येलो वाले इंगेज परफ्यूम की खुशबु एकदम उतर सी गयीं अंदर तक। पीछे बैकग्राउंड में गाना चल रहा था,

तू छरहरी धूप है  
तू करारी शाम  
दिल करें कुर्बान करूँ  
तुझ पे अपनी जान...

वो वाली फोटो अभी तक है, वो वाली खुशबु भी अभी तक याद है। बस कोई नहीं है तो बस है वो, मेरे बगल में....

.....

सच कहूँ, जितनी तेज़ी से वक्त चलता नहीं ना, उस से कम से कम दोगुनी रफ़्तार लगती है उसकी, जब एग्जाम्स आने वाले हो।

मतलब अभी कल सब बात कर रहे थे के क्लास 11th का पेपर कैसा गोबर हुआ था कि ये 12th बोर्ड आ धमका। और भाई साहब अकेले नहीं थे ना। साथ में, खानदान आया था उनका कसम से, 17 साल में जिन रिश्तेदारों को देखा भी ना था, वो भी फ़ोन करके कहते, पढ़ ले बेटा और रोल नंबर भी देदे, रिजल्ट खुद देख लेंगे हम सब। कुछ भी मतलब?

और स्कूल - कोचिंग में तो अलग ही लेवल का कम्पटीशन! मतलब क्या बताऊँ, आगे पीछे लगे पड़े है सब केमिस्ट्री-फिजिक्स सर के। आखिर प्रैक्टिकल में मार्क्स भी तो चाहिए। मैथ्स वाले ही बेचारे थे ; बस क्वेश्चन पूछने जाते थे सब उनके पास, नहीं तो वो भी नहीं। और कोचिंग में सर पहले से पम्फलेट छपवा कर बैठें है नेक्स्ट बैच के लिए, मेरे और उसके फोटो के साथ-साथ में तीन लड़कियाँ और चार लड़के।

फिर करते करते 25 दिसंबर भी आ गया। बकायदा फेयरवेल के साथ हम विदा किये गये और ये बात दिल में बैठ गयीं के अब तो मिलेंगे नहीं, बुरा लग रहा था पर एग्जाम थे, तो पढ़ना भी था।

फिर मार्च भी आई, एग्जाम्स भी हुऐ और काफी सही हुऐ। उम्मीद तो थी के ऐश होगी अब। और उसी जोश में डीएक्टिवेट फेसबुक फिर चालू हो गया और वही एक दिन, भटकते हुऐ वो दिखी। नहीं, डीपी नहीं था, केमिस्ट्री वाले सर म्यूच्युअल में थे फिर ख्याल आया कि टेक्स्ट करा जाए, फिर वही, जो रिप्लाई नहीं आया और ब्लॉक हो गया, या सर को ही बोल दिया तो। हाँ, थोड़ा फट्टू टाइप नेचर है, अब है तो है, क्या करें।

तो दो बार फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज कर डिलीट हो चुका था। फिर एक रात यूँ ही बस आखिरी कोशिश के नाम पर, एक मैसेज रिक्वेस्ट किया, "फिजिक्स का एग्जाम कैसा हुआ तुम्हारा?" और फिर फ़ोन रख दिया। धड़कने तो जो बढ़ी हुई थी, क्या ही बताऊँ।

इज़हार -ए-मोहब्बत की यही शिकायत है।  
इकरार हो या इंकार, सब बदल देता है।

दो घंटे इंतजार के बाद नींद आ गयीं जो ना भी आई होती तो और इंतजार ना होने वाला था। निश्चित किया था कि सुबह उठते ही सबसे पहले मैसेज रिक्वेस्ट डिलीट करना है।

भोर हुई, जैसे की हमेशा होती है, सूरज भी निकला ही था। और फ़ोन देखा तो उसका रिप्लाई था।

" मेरा तो ठीक ही गया, बस एक ऑप्टिक्स का क्वेश्चन पूरा नहीं बन पाया। तुम्हारा कैसा रहा? "

# नई पाठशाला

देखता था प्रतिबिम्ब जिन आंखों में अपना,  
लगता है अब वो आईने बदल गए।

यूँ हुआ तो कुछ भी नहीं बस,  
जिंदगी जीने के मायने बदल गए।

भरोसा पारदर्शिता सच्चाई और ईमानदारी,  
अब इसके पाठ्यक्रम में नहीं आते।

एहसास दिलाते हैं लोग कई बार कि,  
तुम भी नई पाठशाला में क्यों नहीं जाते।

वहाँ झूठ बेईमानी बुराई कूटनीति  
ठगी सब सिखाई जाती है।

हमदर्दी रिश्ते और सहायता,  
पैसे के पन्ने पर लिखाई जाती है।

अब ऐसी नई पाठशाला में जाकर,  
मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आता।

लोग कहते हैं उस पर भाई-  
यह स्वार्थ का गणित है सहज ही नहीं आता।

पुरानी पाठशाला में ही खुश हूँ मैं,  
जहाँ अपनेपन का सुकून तो मिलता है

सुख वैभव यश मिले ना मिले तो क्या,  
पर दूसरों के लिए जीने का  
जुनून तो मिलता है।

-कोमेश विश्वकर्मा







# नैतिकता

-इप्सिता सिंह

जीवन का जहाज आज उत्ताल तरंगों और तूफानों से भरे संसार में भटक गया है। ऐसा इसलिए क्योंकि इसका नैतिक बोध, इसका दिशा सूचक यंत्र खराब हो चुका है। जीवन-ऊर्जा, जीवन को गतिशील बनाने के लिए आवश्यक है परंतु उससे ज्यादा महत्वपूर्ण है उसका सही दिशा में संयोजन। गरीबी की गरिमा, सादगी का सौंदर्य, संघर्ष का हर्ष, समता का स्वाद और आस्था का आनंद यह सब हमारे आचरण से पतझड़ के पत्तों की भाँति झड़ गए हैं। हृदय से मानवीय प्रेम या करुणा का संवेदनशील स्वर, मस्तिष्क से नैतिक चिंतन की अवधारणा और नाभि से अद्भुत संयम और सभ्य आचरण का संकल्प कहीं खो गया है। आज अहिंसा के आलोक की तलाश है। महावीर, बुद्ध और गांधी की अहिंसा किसी कठघरे में कैद है। हिंसा उन्मुक्त अट्टहास कर रही है।

सत्ता और संपत्ति के गलियारों में नैतिक आचरण ताक पर रख दिए गए हैं। भौतिक भोगवाद जनसंख्या बढ़ा रहा है जो आण्विक विस्फोट से कम खतरनाक नहीं है। आधुनिक पीढ़ी की त्रासदी यह है की सबसे बड़ा रुपईया जैसे सूत्रवाक्य जीवन का लक्ष्य बन गया है। ऐसे में धर्म, आध्यात्म और नैतिकता की चर्चा अरण्यरोदन के अतिरिक्त और क्या है? हमें आचरण शुद्धि द्वारा नैतिकता का विकास करना होगा। भगवान महावीर का प्रारंभिक दर्शन भी सर्वोपयोगी नैतिक आचार संहिता में ही निहित था। आध्यात्म आदि प्रसंग बाद में जुड़ते हैं। नैतिक आचरण का पालन ही सच्चे धर्म का प्रतीक है।

# ग़फ़्तग़



यूँ तो भारत दुनिया में कोरोना से सबसे ज्यादा प्रभावित देशों में से एक है और इस बात में कोई हैरानी नहीं है क्योंकि भारत दुनिया का सबसे बड़ा, सबसे आबाद लोकतांत्रिक देश है और लोकतंत्र की आत्मा है चुनाव। भारत में बहुत भिन्नता है, पर फिर भी एक अलौकिक भावना है जो भारतीयों को एक रखती है। मुश्किल घड़ी में लोग बर्बाद तक हो गए पर फिर भी देश के साथ खड़े रहे। ऐसे कई लोगों की जिंदगी कोरोना काल में एकदम से बदल गई। हर पेशे पर कोरोना महामारी का अपना अलग ही दुष्प्रभाव पड़ा। आइए भारत के विभिन्न पेशों से जुड़े लोगों की उन ध्वनियों को अनुभव करते हैं कि किस प्रकार से लोगों का जीवन पलट-सा गया, कैसे करोड़ों जिंदगियाँ कोरोना महामारी से एक साथ बदली और हमारे देश के विभिन्न पेशेवर लोगों और कारीगरों के कारोबार पर इस महामारी से क्या प्रभाव पड़ा।

**अब अग्रिम कार्यकर्ता-कोरोना के खिलाफ जंग में हमारी ढाल हैं। ये पहली पंक्ति के योद्धा हैं। इनको सबसे ज्यादा काम होता है।**

## चिकित्सक

मतलब हमारी लगता है कोई कद्र ही नहीं। कोरोना काल में जैसे मरीज को ठीक करने के पीछे सारी मेहनत मशक्कत हम करें और लोग धन्यवाद डॉक्टर साहब कहने के बजाए कहते हैं कि भगवान का लाख-लाख शुक्र है। खैर कई लोग इतनी इज्जत देते हैं कि लगता है अपुनिच भगवान है। इस कठिन समय में सकारात्मकता-सद्भावना-सहानुभूति इनकी बड़ी ज़रूरत है। अगर किसी को कोरोना हो गया तो उसे ठीक करने वाले प्रोटोकॉल का पालन करना उसके लिए बहुत ज़रूरी है। और इससे ज़्यादा ज़रूरी है कि वो सकारात्मक रहे की मैं ठीक हो जाऊँगा नहीं तो शुरू-शुरू वाले मरीज तो सोचते थे कि जैसे अब अपना वक्त आ चुका है, दूसरी बात अगर कोई संक्रमित हो भी जाता है तो भी उससे अच्छा व्यवहार करें और उसे महसूस न होने दें कि वह संक्रमित है क्योंकि वो मरीज़ तो ठीक हो जाएगा परन्तु आपका यह सौतेला व्यवहार उसके मन में जगह कर जाएगा।

संक्रमण रोकना बहुत ज़रूरी है इसलिए नियमों का पालन ज़रूर करे पर लोग भी दुकानों बाजारों में अस्पताल शहरों में भीड़ जमा करते हैं। ऐसे में कई जगह शादी समारोह से भी संक्रमण फैल रहा है। अब दिल्ली में जैसे क्या हुआ कि ऑक्सीजन खत्म हो गई और समय पर और ऑक्सीजन नहीं आ सकी तो लोग मरना शुरू हो गए ऐसे में उनके तीमारदारों के साथ हमारी पूरी सहानुभूति होती है और उन्हें समझना चाहिए कि हम मरीज को बचाने की पूरी कोशिश करते हैं पर तीमारदार डॉक्टरों की जान पर उतारू हो गए और उन्हें वहां से जान बचाकर भागना पड़ा। लोगों को कोरोना को रोकना होगा ताकि हम पर किसी प्रकार का कोई दबाव न बने। वैसे तो कोरोना से लड़ते लड़ते अब हम पेशेवर हो गए हैं और बस लोगों से सहयोग की आशा रखते हैं आप सामाजिक दूरी का पालन करें मास्क पहने बेवजह या फालतू मे घर से बाहर न निकलें सजग रहें सतर्क रहें सुरक्षित रहें।

कोरोना ने बच्चों का जीवन भी डाँवाडोल किया और बड़ों का भी ऐसे में बच्चों के अभिभावकों पर भी बड़ी जवाबदारी आ जाती है कि उनके बच्चे अध्ययन-अभ्यास भी करते रहें और मनोभावनात्मक रूप से तंग भी न हो जाए यह संतुलन बनाने में जितना आसान प्रतीत होता है उतना ही कठिन है।



विद्यार्थी एवं अध्यापक अध्यापिकाओं के लिए भी कोरोना बहुत बड़ा बदलाव लेकर आया।

## अध्यापक एवं अध्यापिकाएँ

मैं तो क्या ही कहूँ। मेरी कोई सुनता ही नहीं। मेरी तो मतलब हालत ऐसी है कि एकदम से वक्त बदल दिए, हालात बदल दिए, जज्बात बदल दिए, ख्यालात बदल दिए। कोरोना आने से पहले मेरा कितना खौफ होता था। विद्यार्थी मेरी बातें सुनते थे। मेरी इज़्ज़त होती थी। विद्यार्थी मेरी बातों पर गौर किया करते थे पर अब तो जैसे दुनिया ही बदल गई। पहले मैं कहता था कि कक्षा में कोई मोबाइल फोन का उपयोग नहीं करेगा। अब गनीमत है कि उसी मोबाइल से मेरा पेशा सलामत है। पहले मैं बड़ी शान से कहता था की कोई क्लास में बात नहीं करेगा अब वही चुप्पी चुभती सी है। लगता है विद्यार्थी बहुत आज्ञाकारी हो गए हैं। अब मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करता हूँ कि ज्ञान बॉट पाऊँ पर वर्चुअल और रियल में अंतर होता है और बच्चे कहीं न कहीं नाराज़ ही लगते हैं। अब किसी को गाड़ी चलाना सीखना है तो उसे तो गाड़ी पर ही सिखाना होगा ना। गाड़ी चलाने वाली वीडियो गेम खेलने थोड़ी बैठायेंगे। पर समय की मांग है तो अब प्रयोग और प्रैक्टिकल भी ऐसे ही करना पड़ रहा है। वैसे मुझे लगता नहीं है कि अब विद्यार्थी मेरे से पढ़ते हैं। खुद से ही पढ़ते हैं और ज़्यादा ही पढ़ते हैं। परीक्षा में बड़े तगड़े उत्तर लिखते हैं कई दफा मुझे भी सोचना पड़ जाता है कि ये मेरे ही पढ़ाए विद्यार्थी हैं। या इन्हीं विद्वान-विदेशियों ने विकिपीडिया लिखा है। अब अपनी तरफ से तो मेरी पूरी कोशिश है कि मेरी बात विद्यार्थी समझ जाएँ। अब परिस्थिति के अनुसार खुदको ढालना ही पड़ता है। अब बस उस दिन का इंतज़ार है जिस दिन पहली ऑफलाइन परीक्षा होगी। उस दिन लगेगा जैसे पुराने दिन लौट आए। उस दिन का भी अलग ही सुकून होगा पर पता नहीं ये ऊँट कभी पहाड़ के नीचे आएगा या साफता ही निकल जाएगा।



अगर कोरोना ने सबसे ज़्यादा किसी की जिंदगी बदली है तो वह है विद्यार्थीयों की। इनके शिक्षण संस्थान सबसे पहले बंद हुए हैं और सबसे आखिर में खुलेंगे।

## विद्यार्थी

हर विद्यार्थी का एक सपना होता है परीक्षा हो पर कोई फेल ना हो 2020 के मुँह में घी-शक्कर जो हम इतने भाग्यशाली बने और इतिहास में बिना पढ़े पास होने वाले की श्रेणी में स्वर्णिम अक्षरों से अंकित हुए। अब परीक्षाएँ हैं तो पढ़ाई करनी पड़ती है। पर घर पर पढ़ना बहुत मुश्किल साबित होता है क्योंकि घर में रहना और घर में हो रही हरकतों से खुद को एकदम अलग कर लेना एकदम टेढ़ी खीर है तो हमने भी पढ़ाई छोड़-छूटे हुए शौक पूरे करने शुरू किए। दिन भर सोना, रात भर जगना, अधूरी पेंटिंग कंप्लीट करना, ऑनलाइन स्किल्स सीखना, किताब उपन्यास पढ़ना और खूब खाना - जन्नत। भले ही हमें वाटर ट्रीटमेंट के फार्मूले ना आते हो पर इलस्ट्रेटर पर खूब रंगबाजी थी बाहर खेलना बंद था तो क्या अपने घर में झाड़ू लगाते हुए पुशप्स किया है हमने। और क्या कहूँ, जिंदगी इतनी सुकून भरी थी कि कॉलेज में आ गए। अब दिन की शुरुआत होती है पर सर कि स्लाइड के साथ। शाम, रातें 12:00 बजे से पहले काम पूरा करने में कटती हैं। मीट लगा कर सो जाने में पहले लगता था कि कुछ गलत कर रहे हैं पर क्या ही होता है गलत। और परीक्षाओं की क्या ही कहूँ, इतनी एकता देखी नहीं कभी। पूरा सेक्शन लगा है तैयारी करने में और परीक्षा में सबकी बत्ती गुल हो जाती है। प्रोफेसर ऐसे ऐसे प्रश्न पूछते हैं सब सिर के ऊपर से जाते हैं। फिर हमारी पलटन भी किसी से कम थोड़े है। हम भी एकदम प्रश्न की टक्कर के उत्तर लिखते हैं। कोरोना ने हमसे छीना बहुत पर जो मिला हमें वो भी कम कीमती ना था। विद्यार्थी तो परेशान हैं ही पर अध्यापक और अध्यापिकाओं के लिए भी कोरोना बहुत बड़ा बदलाव लेकर आया।



अब अग्रिम कार्यकर्ता जिनको सबसे ज्यादा काम होता है वो तो अपने खास हैं। ऐसे में उन्हें पीछे नहीं छोड़ सकते।

## पुलिस

सड़कें सूनी हो या भीड़ से भरी, पुलिस की कभी छुट्टी नहीं होती। सोचा नहीं था इसका जीवंत उदाहरण भी देखने के लिये मिलेगा। वो 2020 है, जब पूरी दुनिया बंद है, मैं और मेरा पूरा विभाग चप्पे-चप्पे पर नज़र रखकर लॉकडाउन का पालन करवाते हैं। कल तक हमारे विभाग पर थू-थू करने वाले भी हमारा गुणगान करते फिरते हैं, सोशल मीडिया पर। जान हथेली पर रखकर हम सब ने कोरोना जैसी महामारी को देश में फैलने से रोका है। सच कहूँ तो इतना आसान भी नहीं है, उल्टा मुश्किल है, बहुत। फर्ज़ निभाना, अपने लोगों पर लाठियाँ बरसाना ताकि वह सुरक्षित रहें। मनचले जो अपने आगे किसी की सुनते नहीं, उन्हें रौब दिखाकर हड़काना।



कुछ को मुर्गा बना कर घुमाया, कुछ के साथ खेला पबजी। हर पल ख्याल बस यही रहता है कि दूसरी सुबह आज से बेहतर हो। जनता ने भी देखा हमें, सराहा हमारे काम को। और इस सराहना से बड़ी, इस से भावपूर्ण शायद ही कुछ हुआ था हमारे लिए। इसी सराहना से प्रेरित हो हर दूसरे दिन हम और जोश से ड्यूटी पर जाते हैं। अगले कार्यकर्ता कोरोना के खिलाफ जंग में हमारी ढाल हैं। ये पहली पंक्ति के योद्धा हैं-डॉक्टर लोग। जो रहते ही कोरोना के बीच हैं। उनके मन की बात नहीं टाल सकते क्योंकि वो समाज की अतुल्य रूप से सेवा कर रहे हैं। वह आज समाज के समक्ष ईश्वर के समतुल्य हो गए हैं।

कोरोना ने बच्चों का जीवन भी डाँवाडोल किया और बड़ों का भी। ऐसे में बच्चों के अभिभावकों पर भी बड़ी जवाबदेही आ जाती है कि उनके बच्चे अध्ययन-अभ्यास भी करते रहें और मनोभावनात्मक रूप से तंग भी न हो जाए यह संतुलन बनाना जितना आसान प्रतीत होता है उतना ही कठिन है।

## अभिभावक

कोरोना महामारी आने से एक तो घर से काम करना होता है, बच्चों को पढ़ाना होता है और बाद बाकी अपना नित्य कर्म फेसबुक-व्हाट्सएप भी इस्तेमाल करना होता है। तो ऐसे में घर में फ़ोन के लिए महाभारत होना लाज़मी है। फिर ऊपर से बच्चे खाली बैठे भी पता नहीं बड़ी गजब की हरकतें करते हैं। अब ये बच्चे भी क्या करें? इनकी जिंदगी का अभिन्न अंग स्कूल, फोन में है। इनका मनोरंजन भी फोन में है, इनका खेल भी फोन में है, इनके दोस्त भी फोन में है।



मतलब घर-परिवार छोड़कर सब फोन में है। कम से कम दिन में 6 घंटे तो इनको फोन के आगे बिताना पड़ता है और कहीं न कहीं लगता है कि फोन की दुनिया में ये इतने खो गए हैं कि कभी-कभी इनसे ठीक से बात भी नहीं हो पाती है। फिर जब परीक्षाएँ आती हैं तो इनपर इतना दबाव हो जाता है कि हमसे देखा नहीं जाता और हमारे मदद के हाथ खुद-ब-खुद आगे आ जाते हैं। बिना किसी योजना के बिन बुलाये मेहमान की तरह आयी यह ऑनलाइन पढ़ाई को तो असली कक्षा के आगे कमज़ोर पड़ना ही है। पता नहीं जाने कब इनके स्कूल-कॉलेज खुलेंगे और सब पहले जैसा हो जाएगा। जितना जल्दी खुले इनका भविष्य उतना ही अच्छा होगा।

कोरोना काल में शिक्षण व्यवस्था ही नहीं बदली बल्कि बाकी क्षेत्रों पर भी काफी दुष्प्रभाव पड़ा है। बहुत से लोग बेरोजगार हो गए बर्बाद हो गए ऐसे में इनपर भी एक बार गौर किया जाना चाहिए।

## बेरोजगार

जी भईया, सच कहूँ मेरा तो कोरोना काल काफी बढ़िया गुजरा। इतना मस्त वेकेशन और कोई घरवाला नहीं कह रहा, "देखो, निकम्मा बैठा खा रहा है।" क्योंकि अब तो पूरा घर निकम्मा है। कुछ लोग तो मुझसे सलाह माँग रहे थे, खाली वक्त कैसे काटें। मैंने भी बताये कुछ मामूली टोटके। 599 का रिकार्ज, इंस्टाग्राम किया डाउनलोड और खोला रील सेक्शन। बस! सुबह शाम रात, कुछ खबर नहीं होगी। रोज़-रोज़ नये ट्रेंड्स, नया प्रेशर। पहले ये डालगोना कॉफी, फिर धीमे-धीमे सारा होटल का खाना घर पर ही। जलेबी, फाफड़ा, केक, भटूरे और भी ना जाने क्या क्या।



मास्क तो अब फैशन स्टेटमेंट बन गया था, अलग अलग डिज़ाइन के ट्रेंडी मास्क। और भी आगे कुछ होता कि तभी मिला सबसे इंगेजिंग सुसाइड केस। कुछ कहते थे, खुदकुशी थी, कुछ ने साजिश कही। इन्साफ की माँग उठी, आवाज़ उठी। मैंने भी उठायी। चाहे खुद की मानसिक हालत त्रस्त थी, पर मैंने स्टोरी लगायी, I'm there if you need to talk. इन्साफ मिल जाना चाहिए था। पर इस देश में नौकरी और इन्साफ थोड़ी दुर्लभ प्रजातियाँ हैं। यह सब करते-करते आया एग्जाम वाला काण्ड, और फिर दिखा छात्र और सरकार के बीच अद्वितीय विरोध। खैर, ये सब भी निपटा और नवंबर आ गया और आते-आते सब भूल भी गये। अब बस उम्मीद यही थी कि जल्दी से ये मनहूस 2020 खत्म हो और नया साल नयी उम्मीद लाये। बज्जिंगा।

बीता साल आसान ना था, किसी के लिए भी। चाहे हाकिम हो या आम आदमी, दर्द सबने कमोबेश बराबर झेला है। बहुत सी पुरानी आदतें अब अतीत में ही छूट गयीं। बहुत सी नयी आदतें शुमार हुई है, चिरकाल तक साथ रहने के लिए। कुछ पाठ हमने खुद सीखे, कुछ माँ प्रकृति ने सिखाये। मानवता ने हर कदम पर अपनी जिजीविषा का उदाहरण दिया। कुछ नये पहलू दिखे अनदेखे लोगों के। मदद के हाथ आगे आये और देखते ही देखते कारवाँ बनता गया। मुमकिन है भविष्य में कोई दूसरी महामारी प्रकट हो। मुमकिन है उस से भी बुरा। पर एक तथ्य निश्चित रूप से अविचलित रहेगा, हम उस से भी जीत जायेंगे, उबर जायेंगे। थाम कर उम्मीद का दामन, हम हर दफा रोशनी की ओर अग्रसर रहेंगे।

**वक्त मुश्किल बहुत, ज़ख्म भी गहरे लगे है,  
फिर भी हम उठ खड़े होंगे, इंसा जाता ढीठ बड़ी है।**

# 'वो'

कुछ अनजान सी थी वो,  
फिर भी कुछ जानी पहचानी सी थी वो ।

भीड़ में होते हुए भी सबसे अलग वो थी,  
अपनी पहचान बनाने को तत्पर थी वो ।  
आखिर... कौन थी वो?

शायद आप जानते हैं उसे,  
पहचानते भी हैं उसे।

जिसके होने से हमेशा हुआ  
इस जग का कल्याण,  
जिसे माना गया एक वरदान,

मगर फिर भी...  
क्यों हुआ उसका ही हमेशा दान ?

सवाल बहुत है, पर जवाब नहीं !  
बेटियाँ 'ताज' हैं, किसी की 'मोहताज़' नहीं !

माना जो माना इस संसार ने उसे,  
जिसने माना 'ताज' ईश्वर ने भी तारा उसे।

आज भी उसे देखकर बस, यही सवाल उठता है  
आखिर कौन थी, 'वो'?

कुछ अनजान सी थी वो  
फिर भी कुछ जानी  
पहचानी सी थी वो ।

अपनी पहचान बनाने को  
तत्पर थी वो।

वो थी मेरे वतन की  
हर वो लड़की,

वो बेटी जिसे गर्व है,  
अपने वजूद पर ॥

-गरिमा वसन्ता







# चलो कुछ तूफानी करते हैं

-शालिनी

चलो कुछ तूफानी करते हैं,  
चलो थोड़ा अपने आप को समझते हैं।

आप यही सोच रहे हैं ना अपने आप को समझने में तूफानी करने जैसा क्या है? हम तो स्वयं के बारे में सब जानते हैं। मैं भी पहले एसी ही धारणा रखती थी, लेकिन कहते हैं ना, समय सबसे अच्छा गुरु होता है और उसके सिखाने का तरीका भी अलग होता है। हमेशा हम सोचते हैं कि समय हमारे अनुकूल क्यों नहीं चलता, वो इसलिए क्योंकि समय के पास हमारे लिए कोई न कोई नई योजना होती है जो हर बार कुछ नया सिखा जाती है। सुब्रतो बागची ने अपने द्वारा लिखी उपन्यास 'द प्रोफेशनल' में कर्मचारी प्रशिक्षण अभ्यास के दौरान हुए एक परीक्षण के बारे में उल्लेख किया है। उन्होंने अपने सभी कर्मचारियों को एक बंद कमरे में अपनी आँखें बंद करके आवाज के माध्यम से चीजों को अनुभव करने के लिए कहा। कुछ लोगों ने मोबाइल फोन की घंटी तो कुछ ने पैरों की आवाज के बारे में बताया, पर किसी ने भी अपनी साँस की आवाज को अनुभव नहीं किया।

जबकि यह सबसे नजदीक और सुस्पष्ट होता है। इससे मैंने एक ही चीज़ समझा कि हममें से ज्यादातर लोग इस चकाचौंध वाली दुनिया में खोए हुए हैं। हम दुसरो की जिंदगियों को समझने में और उनसे अपनी तुलना करने में इतने व्यस्त हैं कि खुद को भुला बैठे हैं। उदाहरण के तौर पर हम यह देख सकते हैं कि जब भी हमें किसी बायोडाटा में अपनी शक्तियां या कमजोरियां लिखनी हो तो हम गूगल सर्च करने लगते हैं क्योंकि शायद हमें अपने बारे में खुद से ज्यादा गूगल पे भरोसा है, या यूं कहें कभी खुद को तरासा ही नहीं। नतीजे के तौर पर हम अपने आप को आत्म संदेह के बोझ के नीचे दबाए रखते हैं।

सच्चाई तो यह है कि हमारी जिंदगी 'हमारे' बारे में होती है, और यह हमेशा से 'हमारे' बारे में ही थी। जब हम अपने आप को अच्छे से पहचान लेंगे तभी हम अपनी सोच लोगों के समक्ष रख सकेंगे।

खुद को जानना एक खुबसूरत शुरुआत है। हमें अपनी शक्तियां और कमजोरियां दोनों को स्वीकार और सम्मान करना चाहिए। कमजोरियां अगर जिंदगी में न हो, तो जिंदगी कितनी बेरंग हो जाएगी। हमारा कोई लक्ष्य नहीं होगा, कुछ पाने की चाह नहीं होगी। तो चलो कुछ तूफानी करते हैं।



# प्रवासी

-विवेक  
कुमार

अरे ये बस हवा है, कोई बीमारी नहीं। ऐसा सुने हो, कि अपने जानकारी में किसी को हुआ है?

ये तो अमीरों की बीमारी है, विदेश से आई है, दिन रात ए०सी० में रहने वाले को होती है। हम तो मेहनत करते हैं, पसीना बहाते हैं, हमें नहीं होगी ये बीमारी। ये तो शहरों वाली बीमारी है।

हम तो गाँव से हैं, शुद्ध मिट्टी के बने हैं, साफ हवा-पानी से पले हैं। हमारे अंदर ये वायरस टिक ही नहीं पाएगा। ऐसी न जाने कितनी अफवाहें उड़ रही थी राजधानी के उस गोदाम पर जहाँ बहुत से प्रवासी मजदूर काम करते थे। राधेश्याम भी उनमें से एक था। वह यहाँ पर ठेला चलाता था और ऐसी बातें सुनकर कोरोना के बारे में बेफिक्र हो गया था।

इधर कोरोना की रफ़्तार बढ़ती जा रही थी। इसे काबू करने के लिए पूरे देश में एक साथ लॉकडाउन लगा दी गया। राधेश्याम सहित सभी मजदूरों का रोजगार छिन गया। ये सारे लोग दैनिक आधार पर काम करते थे। जिस दिन काम ना हो उस दिन कोई कमाई नहीं होती थी। अब इनके सामने पैसे के अभाव में भुखमरी जैसी समस्या खड़ी हो गई। घर से पैसे मंगाने का कोई विकल्प नहीं था और ना ही घर वापस जाने के लिए कोई रेल या बस। सब बंद हो चुका था। कुछ दिनों तक अन्य लोगों की मदद से इनका पेट भरता रहा।

पर कोई कब तक मदद करेगा? ये कोरोना कब खत्म होगा? ये लॉकडाउन कब हटेगा? ऐसे कई प्रश्न राधेश्याम के मन में हमेशा आते रहते थे। राधेश्याम हमेशा अपनी मेहनत से खाता था। उसे सरकार से पहले भी कोई मदद नहीं मिलती थी और इस बार भी नहीं मिली। उसके मन में सरकार से कोई भी मदद मिलने की आशा भी नहीं रही। वह अपने पाँच-छह साथियों के साथ ठेले से घर जाने का मन बना चुका था। तय हुआ कि सभी जन पाँच-पाँच किलोमीटर तक बारी-बारी से ठेला चलाएंगे। उनका गाँव यही कोई हजार किलोमीटर दूर था तो उन्हें लगा कि पंद्रह - बीस दिन में पहुँच जाएंगे। रास्ते के लिए थोड़ा बहुत राशन, कुछ दूसरे समान और घर पहुँचने के ख्वाबों के साथ राधेश्याम अपने बाकी साथियों के साथ चल दिया।

अब गाँव में ही रहेंगे। अपने पास कोई खेत नहीं है तो क्या हुआ, दूसरों से बटाई पर लेकर ही खेती करेंगे। भले ही पक्का घर नहीं बने, खपरैल के घर में ही रहेंगे, पर वहाँ पेट भर खाना तो मिलेगा। अपनों के बीच रहेंगे और खुश रहेंगे। ये सोचते हुए राधेश्याम कब अपने हिस्से के पाँच किलोमीटर की जगह आठ किलोमीटर ठेला चला लिया पता ही नहीं चला। रास्ते में कई बार पुलिस ने रोका पर उन्हें भी दया आ गई और जाने दिया। राशन तो कब का खत्म हो गया था पर कोई ना कोई देवदूत बनकर सहायता कर दे रहा था। इन सब के बीच कोरोना का खौफ गाँव में भी फैलने लगा। बाहर से आने वाले लोगों से गाँव के लोग घबराने लगे। गाँव आने के रास्ते बंद किए जाने लगे।

जब तक राधेश्याम गाँव पहुँचा, गाँव के सारे रास्ते बंद कर दिए गए थे। गाँव के लोगों ने उसको गाँव के बाहर ही एक विद्यालय में रहने को कहा। यह गाँव के लिए भी और राधेश्याम के लिए भी अच्छा था। राधेश्याम यह समझता था। वह गाँव पहुँचकर भी गाँव से दूर था। रात में सोते समय राधेश्याम यही सोचता रहा कि एक प्रवासी हमेशा प्रवासी ही होता है, पराये शहर के लिए भी और अपने गाँव के लिए भी।



## आगे बढ़!

-सुमित मिश्रा

हिम्मत ना हार, चल..., चल आगे बढ़।  
तुझमें है शक्ति, हर मुश्किल से लड़।

अपने लिए तो किया बहुत  
अब दूसरो के लिए कर,

जिंदगी की राह में कांटे हज़ार मिलेंगे,  
कांटो की भीड़ में फूल भी बेशुमार खिलेंगे।

हिम्मत ना हार, चल...,  
चल आगे बढ़।

फूलो को पाना है तो कांटो से लड़,  
हिम्मत ना हार चल..., चल आगे बढ़।

जीवन है छोटा और समय है कम,  
उन आँखों में भर खुशी जो अब तक है नम ।



# बचपन

-प्रवीण कुमार

बचपन, जब भी ये नाम सुनता हूँ, समय अचानक से ठहर सा जाता है। चेहरे पर हँसी एवं आँखें नम सी हो जाती हैं, जी चाहता है एक-एक पल समय में पीछे जाकर वापस से जी लूँ। बचपन, मनुष्य जीवन का एक ऐसा दौर होता है, जिसमें हर मनुष्य सुख-सुविधाओं का ख्याल किए बिना बस खुले आसमान में उड़ना चाहता है, विशाल समुद्र में डुबकी लगाकर तैरना चाहता है, खुले मैदान में अपने दोस्तों के साथ भागना चाहता है। बचपन, जहाँ एक महल के राजकुमार से लेकर एक सामान्य बालक हर कोई कटी पतंग के पीछे भागना चाहता है, हर कोई शाम होते ही घर से निकल कर अपने दोस्तों के साथ सतोलिये का खेल खेलना चाहता है, हर कोई रात को अपनी माँ की गोद में सिर रखकर सोना चाहता है, और सोते वक्त अपनी उस सपनों की दुनिया में खो जाता है, जहाँ कोई अंतरिक्ष में टहल रहा होता है, कोई हाथ में डंडा लेकर गुनहगारों को सबक सीखा रहा होता है, कोई परिश्रवाक (स्टेथोस्कोप) लिए मरीजों का इलाज कर रहा होता है, तो कोई देश की सीमा पर तैनात रहते हुए देश की सुरक्षा कर रहा होता है।

परन्तु उन सपनों को पूरा कर पाने का अवसर सबको नहीं मिल पाता, कुछ बच्चों पर बचपन से ही ज़िम्मेदारियों का बोझ इतना पड़ जाता है कि उन्हें न चाहते हुए भी अपने सपनों से दूर होना पड़ता है। ये ख्याल दिमाग में आते ही आँखों से आँसू अपने आप बहने लगते हैं, और अचानक से समय का अहसास फिर से होने लगता है व दिल से एक ही आवाज आती है कि "ऐ बचपन काश तू फिर लौट आए"। अंत में एक बात बोलना चाहूँगा कि मुझे बहुत दुख होता है उन बच्चों के लिए, जो शिक्षा से वंचित रहने की वजह से अपने सपनों को पूरा नहीं कर पाते। ऐसे में मुझे अपने कॉलेज के " लिटरेसी मिशन " अभियान से जुड़े उन सभी सदस्यों पर बहुत गर्व महसूस होता है जो की कॉलेज के श्रमिकों के बच्चों एवं अन्य शिक्षा से वंचित रहने वाले बच्चों को शिक्षा प्रदान कर उनके सपनों को पूरा करने में उनकी मदद करते हैं। मैं उनकी इस पहल के लिए उन्हें धन्यवाद भी देना चाहूँगा।

# ये जग और कुछ भी नहीं, कान्हा तेरी बँसी की धुन है रे

ये जग और कुछ भी नहीं,  
कान्हा तेरी बँसी की धुन है रे,  
जो भी सुन ले, कान्हा-कान्हा गाए,  
बस कोई सुन तो ले।

हवा की हिलोर में,  
सागर की सनन-सनन,  
मिट्टी की महक में,  
झरने की झनन-झनन,

सब एक धुन में कान्हा गाए,  
बस कोई सुन तो ले,  
ये जग और कुछ भी नहीं,  
कान्हा तेरी बँसी की धुन है रे।

थक कर बैठा हूँ तरुवर तले,  
अपनी बँसी से लोरी तू सुना दे,  
जग की दिशाहीन दौड़ से खींच,  
वो ठहराव की तू धुन सुना दे।

वो धुन सुना जिसमें  
सफर हो शून्य से अनंत की,  
तेरी बँसी की धुन मुझे भाए,  
जैसे रवि हो हेमंत की।

अनंत शून्य में  
अनाहत नाद बँसी की,  
शिव के डमरू में  
डंकार तेरी बँसी की,

पाँचजन्य और पौण्डर में  
है गूँज तेरी बँसी की,  
पिनाक हो या गाँडीव सब में  
ठनकार तेरी बँसी की,

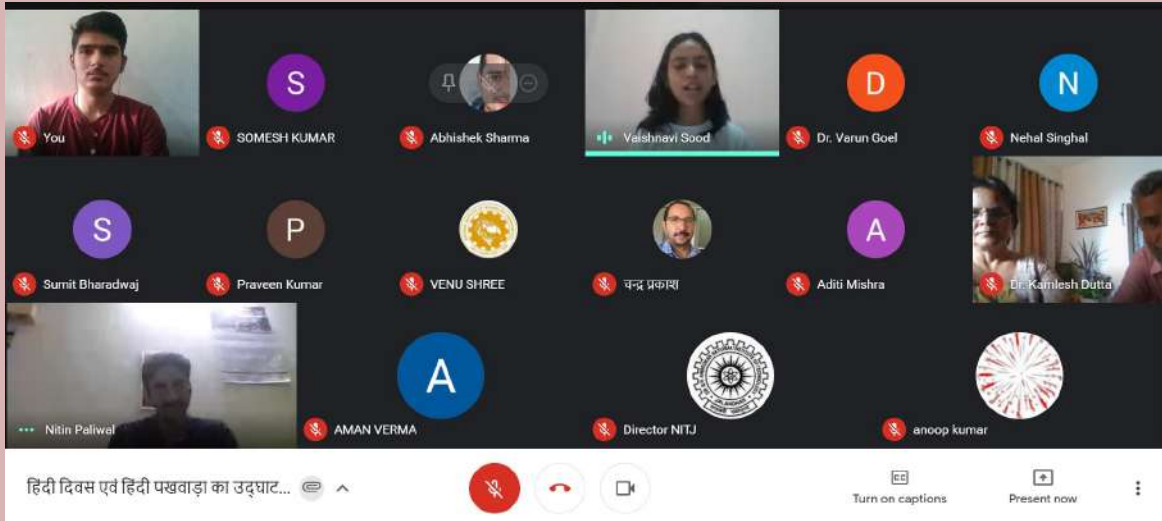
हर जन जन में हर कण कण में  
बँसी बाजे, बस कोई सुन तो ले,  
ये जग और कुछ भी नहीं,  
कान्हा तेरी बँसी की धुन है रे॥

-नितीश कुमार



# अभ्युदय

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी समिति द्वारा अभ्युदय 2020 का आयोजन किया गया। इस वर्ष कोरोना वैश्विक महामारी की वजह से यह कार्यक्रम ऑडिटोरियम में तो आयोजित नहीं हो पाया लेकिन वर्चुअल मोड में भी इसे उसी उत्साह के साथ मनाया गया। मन में अपनी संस्कृति के प्रति अखण्ड सम्मान व राष्ट्र के प्रति निज गौरव की अभिव्यक्ति स्वरूप था "अभ्युदय 2020"।



हिंदी पकवाड़ा 2020, का शंखनाद 14 सितम्बर को संस्थान के निदेशक प्रो ललित कुमार अवस्थी, प्रो सोमश शर्मा, हिंदी राजभाषा प्रकोष्ठ श्री नितिन पालीवाल जी द्वारा किया गया। इसमें सर्वप्रथम संस्थान के निदेशक प्रो ललित कुमार अवस्थी ने हिंदी भाषा के महत्व के बारे में सभा में उपस्थित सभी लोगों को सम्बोधित किया। इसके बाद संस्थान के विभिन्न छात्रों द्वारा हिंदी में अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की गयीं। हिंदी पकवाड़ा के उद्घाटन समारोह के अंत में प्रो सोमश शर्मा, हिंदी राजभाषा प्रकोष्ठ श्री नितिन पालीवाल ने छात्रों को सम्बोधित किया। इसी के साथ हिंदी पकवाड़ा प्रारम्भ हुआ जिसमें संस्थान के छात्रों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएँ (कविता लेखन, लघु कथा लेखन, कविता गायन) आयोजित की गयीं जिसमें संस्थान के छात्रों द्वारा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया गया।

15 दिन के हिंदी पकवाड़े के बाद 30 सितम्बर को हिंदी पकवाड़ा समापन समारोह रखा गया। जिसमें समारोह के मुख्य अतिथि महोदय संस्थान के निदेशक प्रो ललित कुमार अवस्थी के सम्बोधन से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। फिर इसमें संस्थान के विभिन्न छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा कविता गायन प्रतियोगिता में भाग लिया गया। कार्यक्रम के अंत में प्रो सोमश शर्मा, हिंदी राजभाषा प्रकोष्ठ श्री नितिन पालीवाल जी द्वारा सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं की घोषणा की गयी।

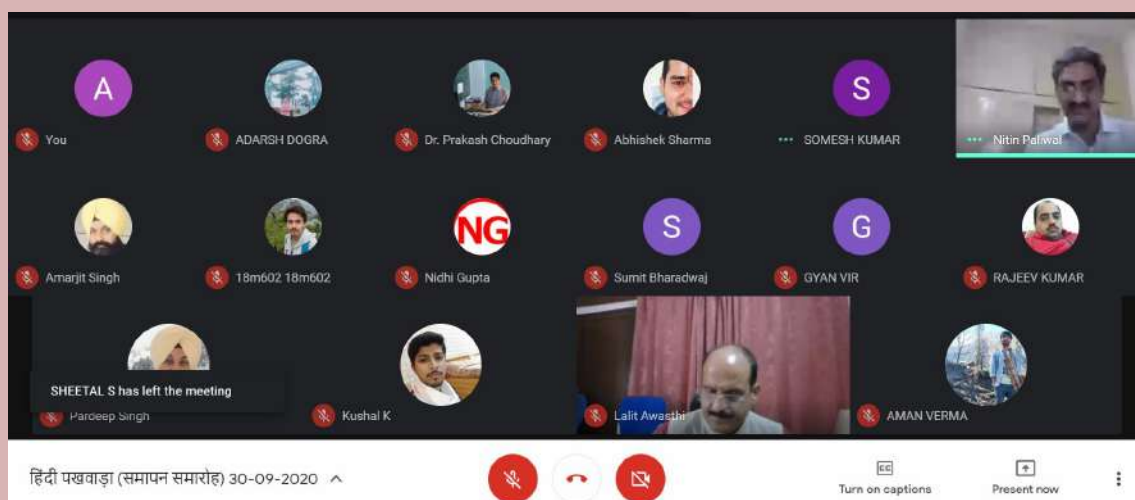


आवश्यक है प्रयास करना, एक पहल करना, एक लक्ष्य की ओर कार्यरत रहना। जय लक्ष्य हिन्दी भाषा को प्रतिस्थापित करने जैसा हो तो अपना सर्वोच्च प्रदान करना ही चाहिए। ऐसा ही एक प्रयत्न था "अभ्युदय 2020"।

हालांकि कोरोनावायरस ने अभ्युदय के रंग को फीका करने का कोशिश जरूर किया पर हिंदी समिति अपने अथक प्रयास से ऑनलाइन एवं ऑफलाइन की दूरी को पाटने में काफी हद तक सफल रहा। इन सभी के बीच कहीं ना कहीं कॉलेज के प्रांगण में आयोजित होने वाला "अभ्युदय" की याद आ ही जाती है।

प्रांगण में आयोजित "अभ्युदय" महज एक दिन का नहीं होता। हिंदी पखवाड़ा के द्वितीय सप्ताह से ही कई मनोरंजक एवं रोचक कार्यक्रमों जैसे मन की बात, ऑनलाइन शायरी लेखन प्रतियोगिता इत्यादि के साथ इसकी शुरुआत हो जाती है। कॉलेज के विभिन्न क्लब जैसे डांस क्लब, म्यूजिक क्लब इत्यादि का प्रस्तुतीकरण अभ्युदय की सुंदरता में चार चांद लगा देते हैं। अभ्युदय के एक दिन पहले कॉलेज के सभागार में काव्य पाठ एवं गायन प्रतियोगिता के प्रतियोगियों को अपना-अपना प्रस्तुतीकरण राजभाषा अधिकारी की उपस्थिति में करना होता है तथा उसी समय विजेताओं की सूची तैयार हो जाती है।

अन्य प्रतियोगिताओं की प्रविष्टियाँ ऑनलाइन माध्यम से ली जाती है। समापन समारोह के आयोजन के एक दिन पहले हम सभी विजेताओं को समापन समारोह में आने के लिए आमंत्रित करते हैं। समापन समारोह मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ प्रारंभ होता है। सभी विजेता अपनी कृतियों को प्रस्तुत करते हैं। म्यूजिक एवं डांस क्लब की भी प्रस्तुति होती है। फिर मुख्य अतिथि, हमारे महाविद्यालय के निदेशक एवं राजभाषा अधिकारी का भाषण होता है। तत्पश्चात पुरस्कार वितरण प्रारंभ होता है। अंत में हिंदी समिति के सेक्रेटरी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ अभ्युदय का समापन होता है।





# वेब सीरीज रिव्यू: हल्की फुल्की पंचायत

-शिखा शुक्ला

वेब सीरीज रिव्यू: हल्की फुल्की पंचायत

वेब सीरीज: पंचायत

स्टार कास्ट: रघुवीर यादव, नीना गुप्ता, जितेंद्र कुमार, चंदन रॉय, फैसल मलिक आदि।

निर्देशक: दीपक कुमार मिश्रा

ओटीटी: अमेजन प्राइम वीडियो

देर रात मैंने रघुवीर यादव, नीना गुप्ता, जितेंद्र कुमार द्वारा अभिनीत "पंचायत" देखी। यह एक हल्की फुल्की वेब सीरीज है। शानदार एक्टिंग और ठीक-ठाक सा निर्देशन इस वेब सीरीज में देखने को मिलता है। गुंडागर्दी, मारपीट और एक्शन से अगर आप ऊब गए हैं तो आपको 'पंचायत' पसंद आ सकती है।

उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के फुलेरा ग्राम पंचायत की कहानी वेब सीरीज में दर्शाई गई है। अभिषेक त्रिपाठी (जितेंद्र कुमार उर्फ जीतू भैया) पंचायत ऑफिस में सचिव पद पर भर्ती हुए हैं। शहर का एक पढ़ा लिखा लड़का जिसका एमबीए करने का ख्वाब है, वह गांव की छुट-पुट समस्याओं में फंस जाता है। दूसरी ओर यह कहानी गांव की प्रधान, यानी मंजू देवी की कहानी कहती है, जिन्होंने पंचायत का चुनाव तो लड़ा लेकिन प्रधान वो नहीं हैं बल्कि उनके प्रधान पति बृजभूषण दुबे (रघुवीर यादव) हैं। आधिकारिक तौर पर नहीं लेकिन गांव के लिए प्रधान बृजभूषण ही हैं। वह ऑफिस से लेकर गांव के सभी कामों में हिस्सा लेते हैं। उनकी पत्नी मंजू देवी घर का चूल्हा चौका से लेकर तमाम घर के काम करती हैं लेकिन प्रधानगिरी से उन्हें कोई लेना देना नहीं है।

सरकार हर कुछ सालों में प्रधानी के चुनाव में महिलाओं के लिए कुछ सीट आरक्षित करती हैं जिनका फायदा आज के युग में भी अप्रत्यक्ष तरीके से पुरुष ही उठाते हैं वह अपनी महिलाओं को चुनाव में खड़ा करके वोट लेते हैं और जब वह जीत जाती है तो वह केवल आधिकारिक रूप से प्रधान कहलाती हैं जबकि असली हिस्सेदारी उस पुरुष प्रधान की होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आज भी हमारी सामाजिक व्यवस्था में पितृसत्तात्मक व्यवस्था कायम है। हमारे भारत देश में अधिकांश गांवों में आज भी हालात ऐसे ही हैं। भले ही महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित कर दी गई हों लेकिन हुकूमत उनके घर वाले ही चलाते हैं। युवाओं के बड़े-बड़े सपने, गांव की समस्याएं आदि छोटी-छोटी समस्या इस वेब सीरीज में दिखाई गई है।

सीरीज यह भी सोचने को मजबूर करती है कि क्या महिला जनप्रतिनिधियों को समाज ने वाकई अपनाया है?

25-30मिनट के छोटे छोटे एपिसोड बेहद हल्के और सुकून भरे हैं और प्रत्येक एपिसोड में एक सीख छुपी है।

फिल्म का अहम पात्र अभिषेक त्रिपाठी है, पूरी फिल्म उनके इर्द गिर्द घूमती हैं फिर भी फिल्म की पटकथा में कहीं न कहीं चूक रह जाती है। दरअसल अभिषेक त्रिपाठी को सिर्फ अपने ही काम में रूचि है, उनमें कहीं भी खुलकर नायक नहीं बनता दिखा, जबकि कुछ सीन में लगता है कि वह कुछ बड़ा करेंगे और उसका कोई निर्णय होगा लेकिन ऐसा होता नहीं है।

'पंचायत' वेब सीरीज की खासियत ये है कि ये हमें निराश नहीं करती। शुरुआत में आपका मन शायद इसे देखने में न लगे लेकिन जैसे ही आप इसके दूसरे भाग पर पहुंचते हैं तो ये आपको लगातार देखने पर मजबूर करती है। हल्की-फुल्की कहानी और साफ-सुथरे दृश्य आपको बोर नहीं होने देंगे।

# लड़कियों के नाम

खुद खुदा कल मेरे सपने में आ गए  
कुछ लफ़्ज़ वो इंसानियत मिटाने वाले  
दर्िंदों के लिए बता गए

उनसे भी शायद यह सब सहा न गया

क्योंकि चाहते थे बोलना बहुत पर इन  
लफ़्ज़ों के अलावा उनसे भी कुछ कहा  
न गया

जो रोशनी में मुझे धितकारते हैं वे  
चाहते हैं मैं अंधेरे से उन्हें बचाऊँ

दूसरों की बहन बेटियों को छेड़ते हैं  
और चाहते हैं उनकी बहन बेटियों को  
मैं बचाऊँ

अरे कानून से नहीं तो मेरे से ही थोड़ा  
डर लो

कभी तो अपनी इन आँखों में खुद के  
लिए भी शर्म भर लो

अरे इस दुनिया को मैंने ही बसाया है  
तुम लोगों को भी मैंने ही बनाया है

पर कभी सोचा न था कि तुम लोग  
कुछ ऐसा करोगे

इंसानियत छोड़ व्यवहार दर्िंदों  
जैसा करोगे

अरे उन्हें भी उतना ही हक है इस  
जिंदगी को जीने का

इस छोटी सी जिंदगी में दो जाम  
खुशी के पीने का

पर तुमने उनकी आँखों में एक डर भर दिया

मेरी फूल जैसी बेटियों को इस दुनिया में  
बेबस कर दिया

इसलिए इस समाज से अब उन्हें डरना  
पड़ता है

हर हक के लिए उन्हें लड़ना पड़ता है

पर एक दिन ऐसा बहुत जल्द आएगा

जब लड़कियों को भी लड़कों की तरह  
पढ़ाया जाएगा

चाहे कोर्ट हो या हो जंग का मैदान  
हर जगह उन्हें खुद से आगे पाएगा

और जब खुद बनाएंगी लड़कियाँ अपने  
लिए कानून,  
शायद तब उनका यह डर हमेशा के लिए  
मिट जाएगा

तब शायद यह समाज भी उन्हें उनकी  
इज्जत लौटाएगा

बेसब्री से इंतजार है उस दिन का क्योंकि  
वह दिन बहुत जल्द आएगा.....

-कार्तिक शारदा





# यह नया वक्त वह पुराना ख्याल

-हर्षित सैनी

आज के जमाने में और पुराने वक्त में बहुत से बदलाव आ रहे हैं जो न कि सिर्फ आर्थिक तौर पर हैं, परंतु साथ ही साथ सामाजिक तौर पर भी हैं। आजकल के लोग पहले की तरह किसी के प्रति प्यार भरी भावना से तो दूर, बिना जाने किसी से प्रति नफरत भरी भावना से व्यवहार करते हैं। रोज ही हमारे सामने कितने ही किस्से आ जाते हैं कि सोच न मिलने के कारण मित्रों में लड़ाई हो गई परंतु पुराने समय में ऐसा कुछ नहीं होता था। हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की भावनाओं का आदर करता था एवं मित्रों में तो एक अलग ही प्यार था की एक मित्र दूसरे मित्र की परेशानियों को मिटाने के लिए हर पल तत्पर रहता था। अगर हम यह चीजें समाज में जाकर बोले तो समाज हमसे कहता है कि तुम्हारे विचार पुराने हैं इन विचारों से यह जमाना नहीं चलता। तो उनका तात्पर्य यह है कि पुराने विचारों वाले लोग समाज को बर्बाद कर रहे थे। आजकल हर व्यक्ति खुद के लिए मतलबी बन चुका है। अगर हम खुद को ही देख लें तो हम में से कितने ही लोग हैं जो अपने खुद के परिवार को वक्त दे पाते हैं??

अगर आप वक्त निकालते हैं तो बहुत अच्छी बात है परंतु जो नहीं निकालते हैं या निकालना नहीं चाहते उनके लिए मैं बस यही कहना चाहूंगा कि घरवालों से ज्यादा सगा कोई नहीं होता। जब तक वे आपके साथ है उनके साथ अच्छा व्यवहार कीजिए एवं अच्छे पल बिताईये। आपको जिंदगी देना एवं उसे सुधारना, दोनों ही काम आपका परिवार ही करता है। अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि चाहे जमाना कितना भी बदल जाए कुछ चीजों को कभी नहीं बदलना चाहिए। मैं यह नहीं कहता कि बदलाव जरूरी नहीं है पर कुछ बदलाव जरूरी भी है जैसे भेदभाव की भावना को बदलना जरूरी था। पर आज चाहे जात-पात की भावना लगभग खत्म हो चुकी है। इन बातों पर अब ध्यान नहीं दिया जाता परंतु आजकल लोग ध्यान देते हैं तो इस चीज पर कि कौन कितना अमीर है या कौन कितना गरीब। इसलिए जब तक यह चीजें बदली नहीं जाएंगी तब तक चाहे जमाना कितना भी आगे बढ़ जाए मानवता हमेशा पिछड़ी ही रहेगी।

# दोषी कौन?

श्याम अस्पताल पहुँचकर कंपाउंडर की सूचना का इंतजार कर रहा था क्योंकि उसे अपनी माँ का इलाज करवाना था। बहुत सारे लोग पहले से वहाँ मौजूद थे। इसलिए श्याम को पता था कि अभी बहुत देर इंतजार करना पड़ेगा। उसे माँ की हालत देखकर बेचैनी हो रही थी। उन्हें साँस लेने में दिक्कत हो रही थी और वह जोर-जोर से साँस लेने की कोशिश कर रही थी। जब इंतजार की घड़ी खत्म हुई तब श्याम अपनी माँ को डॉक्टर के कक्ष में लेकर गया। महामारी की वजह से डॉक्टर ने एक सुरक्षित दूरी से उसकी माँ से पूछताछ करने के बाद उन्हें कोरोना वायरस से संक्रमित होने की आशंका जताई और कोरोना की जाँच के लिए भेज दिया। श्याम रिपोर्ट का इंतजार करने लगा।

उसकी माँ की हालत लगातार बिगड़ती जा रही थी पर कोरोना रिपोर्ट के बिना इलाज संभव न था। रिपोर्ट में कोरोना का संक्रमण आया और डॉक्टर ने तुरंत उसकी माँ को किसी दूसरे अस्पताल में भर्ती करने के लिए कहा क्योंकि वहाँ कोरोना के मरीजों के लिए बेड उपलब्ध नहीं था। टीवी और अखबारों में देखे भय के सारे दृश्य उसके मस्तिष्क को नकारात्मक विचारों से भरने लगे। वह जल्दी से अपनी माँ को लेकर दूसरे अस्पताल की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर उस ने डॉक्टर को अपनी माँ की हालत के बारे में बताया।

**श्याम :** डॉक्टर, माँ की तबीयत बहुत खराब है। इन्हें साँस लेने में बहुत दिक्कत हो रही है और शरीर तवे की तरह गर्म है। सर्दी-जुकाम से परेशान हो गई हैं।

**डॉक्टर :** हमारे अस्पताल के हर बेड पर कोरोना का मरीज है और वेंटिलेटर की भी कमी है। यह भी कोरोना संक्रमित ही हैं। हम चाह कर भी इन्हें यहाँ भर्ती नहीं कर पायेंगे।

इधर, श्याम की माँ की परेशानी बढ़ती ही जा रही थी। वह बार-बार श्याम को अपने पास बुला रही थीं। जब तक श्याम अपनी माँ के पास आता वह बेहोश हो चुकी थीं।

**श्याम :** डॉक्टर, कुछ कीजिए। अब मेरी माँ की जिंदगी आपके हाथों में है। इन्हें बचा लीजिए।



इतना कह कर वह फूट-फूटकर रोने लगा। कभी अपने काँपते हाथों से उनका चेहरा छू रहा था तो कभी उन्हें होश में लाने का प्रयास कर रहा था। डॉक्टर लगातार उन्हें किसी दूसरे अस्पताल में भर्ती करने के लिए कह रहे थे साथ ही साथ श्याम को भी क्वारंटीन में रहने की सलाह दे रहे थे। डॉक्टर ने देखा कि उसकी माँ का शरीर शिथिल पड़ गया है और उनका नब्ज जाँचा। अपने स्टैथोस्कोप से उनकी धड़कन को जाँचा। कोरोना ने उनकी जान ले ली थी। श्याम डॉक्टर की बातों पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। वह माँ के सिर को सहला रहा था और रोते हुए उन्हें जगने के लिए कह रहा था।

**श्याम:** माँ, देखो ना यह डॉक्टर पता नहीं ऐसा क्यों बोल रहे हैं। हाँ, इन्हें कुछ भी नहीं पता। ऐसे कैसे आप मुझे छोड़कर चली जायेंगी। अब जल्दी से उठ जाओ ना माँ। हम लोग दूसरे अस्पताल में चलते हैं। वहाँ तो एक बेड आपके के लिए जरूर खाली होगा।

श्याम की आंखें आंसुओं से भरी हुई थी। उसकी माँ नहीं जग रही थी। वह फूट-फूट कर रोने लगा। किसी तरह अपनी माँ को घर लेकर आया। घर पर केवल श्याम और उसकी माँ रहते थे। उसके पापा बचपन में ही उन्हें छोड़कर चले गए थे। श्याम का पालन-पोषण उसकी माँ ने ही किया था।

श्याम अपनी माँ के पास बैठा था और घर को बड़े ही गौर से देख रहा था। घर में अपनी माँ के साथ बीता बचपन, उनकी ममता, प्यार, डांट- हर एक पल उसे याद आ रहे थे। पर अचानक उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया। अब उसका दिमाग दोषी को खोजने में जुट गया था। पहले तो उसने खुद को दोषी माना। शायद उसी से कहीं भूल हुई हो और लापरवाही के कारण ऐसा हुआ हो। फिर ईश्वर को कोसने लगा। फिर डॉक्टरों की बारी आई। उसने डॉक्टर को तो निष्ठुर ही घोषित कर दिया जिसने कोरोना रिपोर्ट आने तक इलाज को आगे नहीं बढ़ाया। फिर उसकी आंखें अस्पताल की कमी एवं सरकार की नीतियों पर तन गई। और वह इसी व्यूह में घूमता रहा। फिर अचानक उसने अपनी माँ को गले से लगा लिया और फूट-फूट कर रोने लगा।



## यात्रा वृत्तांत

-निखिल जम्वाल

"आओ संग एक कहानी बनाते हैं,  
चलो कहीं घूम के आते हैं .....

यूं तो कोरोना काल में पर्यटन क्षेत्र की बैंड बजी हुई है पर फिर भी इस विचार से कोई इनकार नहीं कर सकता की पर्यटन करने से एक व्यक्ति के व्यक्तित्व में खासा निखार आता है। पर्यटन का एक अपना ही आनंद है। ऐसे ही एक मर्तबा मुझे मेरे विद्यालय की तरफ से एलोरा गुफाओं की सैर करने का अवसर मिला ।

विश्व विरासत स्थल और वहां की स्थानीय भाषा में वेरुल लेण्या नाम से प्रसिद्ध एलोरा की गुफाएं एक अत्यंत दर्शनीय स्थल है। मैं और मेरे मित्र ऐसी जगह जाने को लेकर बहुत उत्साहित थे। हम पिछले दिन से ही अपना सामान पैक करके तैयार थे। यात्रा वाले दिन हम लोग सुबह जल्दी नहा धोकर नाश्ता करके तैयार हुए तथा ठीक सुबह पौने सात बजे स्कूल के गेट पर एकत्रित हो गए। हमारे अध्यापक सह गाइड श्री सुरडकर ने हमारी गिनती की तथा दोपहर का भोजन रख लिए जाने की पुष्टि की। निर्धारित समय ठीक 7 बजे बस भी आ गई। हम चढ़ते सूरज की पहली झलक पड़ते ही सब बस में सवार होकर निकल पड़े अपनी मंज़िल की ओर। सफ़र के 3 घंटे कब गुज़र गए पता ही न चला। मित्रों संग अठखेलियां करते, बातें करते, अंताक्षरी खेलते, गाने गाते हुए हम लोग एलोरा पहुंचे। परन्तु मैं इन सब से दूर कहीं और ही खोया हुआ था मैं खिड़की वाली सीट पर बैठकर रास्ते में आने वाले खेतों, जगहों, लोगों, सूर्योदय इत्यादि को देख आतुर हो रहा था। रास्ते में प्याज, बाजरा, केले, बेर इत्यादि के खेत तथा औरंगाबाद शहर का नज़ारा लेते लेते हम पहुंच गए एलोरा ।

एलोरा की गुफाओं का निर्माण 578 ईसवी में राष्ट्रकूट शासक कृष्णराज ने करवाया था। ये गुफाएं द्रविड़ वास्तु शिल्पकला का अद्वितीय नमूना है। एलोरा में 34 गुफाएं हैं। इनमें से 12 बौद्ध, 17 हिंदू तथा 5 जैन धर्म को समर्पित हैं। ये सभी बेसाल्ट की खड़ी चट्टानों को काटकर बनाई गई हैं तथा ये सभी उपर शिखर से शुरू करते हुई नीचे नींव की तरफ को काटकर निर्मित है जो इन्हें बहुत खास बनाता है। एलोरा गुफाओं में सबसे महत्वपूर्ण गुफा है गुफा नंबर 16 जिसे कैलाश नाथ मंदिर के नाम से जाना जाता है ।

यह विश्व में सबसे बड़ा अखंड ढांचा है। इसके निर्माण में 150 वर्ष से भी अधिक समय लगा था। यह भगवान शिव को समर्पित है तथा यहां रामायण की घटनाएं, नटराज अवतार एवं दशावतार दीवारों पर नक्काशी से उकेरी गई हैं। इसके अलावा गुफा नंबर 10 बौद्ध धर्म की अति महत्वपूर्ण गुफा है यहां भगवान बुद्ध की बहुत बड़ी और खूबसूरत प्रतिमा स्थापित है। यह गुफा 2 मंजिला है तथा यहां के शिलालेख में महायान बौद्ध धार्मिक वचन लिखे हुए हैं।

गुफा नंबर 32 जैन धर्म को समर्पित हैं यहां ऐरावत पर सवार इंद्रदेव की मूर्ति तराशी गई है तथा ठीक उसके विपरीत शेरनी पर सवार इंद्राणी की मूर्ति तराशी गई है। इसके अलावा यहां गोमतेश्वर बाहुबली, भगवान महावीर तथा भगवान पार्श्वनाथ की मूर्तियां हैं।

गुफा नंबर 29 में रावण को शिव पार्वती समेत कैलाश पर्वत उठाने की चेष्टा करते हुए दर्शाया गया है तथा भगवान शिव का तांडव नृत्य प्रस्तुत किया गया है। ये तो मुख्य गुफाएं हैं इनके अलावा यहां और भी कई सारी गुफाएं हैं जो दर्शनीय हैं। इसके अलावा यहां सीता की नहानी नाम से एक मौसमी जलप्रपात है हम ग्रीष्म काल में गए थे तो उसका अनुभव ना कर पाए। इसके अलावा यहां श्री घृष्णेश्वर महादेव 12वा ज्योतिर्लिंग मंदिर है जो 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है, इसलिए प्रसिद्ध है। यूं तो वापस जाने का मन न था पर मजबूरी थी तो जाना पड़ा। बीच रास्ते में हमने भोजन किया और स्कूल की ओर निकल लिए। यह अनुभव मुझे जीवन भर याद रहेगा।



## ये वक्त नहीं खराब

-अनिकेत चौधरी

ये वक्त नहीं खराब,  
बस सोच का नज़रिया है।

खुद से खुद को तराशने का,  
बस एक ज़रिया है।

कि आसमां भी उस रोज़,  
ज़मीन के आगे झुक जाएगा।

कोशिश जो करेगा,  
तो वक्त भी बदल जाएगा।

कि डूबकर भी इसमें तैर जाए,  
ये उत्साहों का जो दरिया है।

क्योंकि ये बस एक ज़रिया है,  
सोच का नया नज़रिया है।



## मन को कचोटता है 'पराया धन' का तमगा

-नम्रता यादव

समानता एक ऐसा शब्द है, जो अपने आप में बहुत कुछ व्यक्त करता है। सामाजिक समानता, लैंगिक समानता और शैक्षणिक समानता आधुनिक युग के ऐसे विषय हैं, जिस पर हर तीसरा व्यक्ति चर्चा करते दिखाई देता है। समानता को किसी भी संवैधानिक देश की राजनीति का आधार-स्तंभ माना जाता है। भारत का संविधान भी भारतीय नागरिकों को समानता का अधिकार प्रदान करता है। पर क्या आपको लगता है कि यह अधिकार हर नागरिक को प्राप्त होता है? नहीं। आज भी हमारे देश में ऐसे कई वर्ग हैं, जो इस अधिकार से वंचित हैं। एक लड़की या एक महिला को आज भी यह अधिकार पूर्णतया प्राप्त नहीं है। लैंगिक समानता और नारी सशक्तिकरण आज के चर्चित विषय हैं।

एक लड़की को माता-पिता पर बोझ समझा जाता रहा है। लड़का-लड़की, नर-नारी, स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं, जो मिलकर प्राकृतिक कालचक्र की रचना करते हैं। भगवान ने दोनों को एक समान बनाया, किंतु इंसान ने शारीरिक भिन्नता के आधार पर भेदभाव करना शुरू कर दिया। समाज को पुरुष प्रधान समाज की संज्ञा दे दी गई, और स्त्री को शोषण मात्र की वस्तु के तौर पर समझ लिया गया। समाज के अनुसार लड़कों को घर खर्च देखना चाहिए वही लड़कियों का दायरा घर की रसोई तक सीमित होना चाहिए।

“लड़की पराया धन है” यह वाक्य कानों में पड़ते ही मन को कचोटता है। हालात यहां तक है कि जब एक मां, बेटी को जन्म देती है तो उसे यहां तक सुनना पड़ता है “लड़कियों से नाम होते हैं क्या?” पिता को दूसरी शादी करने की सलाह तक दे दी जाती है। मैं यह नहीं कहूंगी कि यह हालात हर जगह के हैं, पर अभी भी कई इलाकों में लैंगिक समानता के लिए बदलाव की पहल होना बाकी है।

बदलाव की ओर बढ़ रहे कदम

समय बदला, लोगों की जीवनशैली बदली और हमारे आस-पास जब जीवन संघर्ष की सफल कहानियों ने स्थान बनाना शुरू किया तो सोच बदलनी शुरू हुई। सोच बदली तो घरों का माहौल बदलने लगा, और लड़का-लड़की को समान रूप से देखने की परंपरा घर करने लगी। ये सोच बिल्कुल गलत है, कि लड़कियां शारीरिक रूप से कमजोर होती हैं। उनके अंदर अपार शक्ति व संवेदनशीलता होती है जिसके बल पर वे आज हर क्षेत्र में लड़कों की बराबरी कर रही हैं। हमारे सामने सालों पहले की गार्गी, सीता, अहिल्या और आधुनिक समय में किरण बेदी, पीवी सिंधु, साक्षी मलिक, प्रियंका चोपड़ा, ऐश्वर्या राय बच्चन, सानिया मिर्जा आदि चर्चित व सफल नाम हैं जिन्होंने लड़कियों की सफलता का अद्भुत प्रदर्शन किया है।

सुरक्षा है चिंता

हमारे आस-पास अक्सर जब भी नारी सशक्तिकरण की आवाज गूंजने लगती है, तभी कहीं न कहीं नारी के खिलाफ अत्याचार, अपराध और शोषण की वारदात भी अधिक सुनने व देखने को मिलती है। वह चाहे दिल्ली की निर्भया कांड के बाद हुई घटनाएं हों या फिर तीन तलाक पर आया उच्चतम न्यायालय का फैसला ही क्यों न हो। दोनों ही घटनाओं के दौरान एक ओर बालिकाओं की सुरक्षा की चर्चाएं होती रही तो तो दूसरी ओर हमले भी तेज हुए। अपराध और जबरन तलाक देने की वारदात भी सामने आई। पुरुष प्रधान समाज का एक वर्ग नारी को आगे बढ़ते या उसका गुणगान होते नहीं देख पाता है, और ऐसे लोग बदले की भावना से किसी को भी अपना शिकार बनाने से स्वयं को रोक नहीं पाते। यह स्थिति हमें परिवारों में बराबर की परवरिश ना दिए जाने के कारण उत्पन्न हुई है। बराबर की परवरिश में दोनों के महत्व को दोनों को समझाया जाएगा तभी स्थिति बदलेगी।

... और अंत में

मेरा यह मानना है कि अब वह समय आ गया है जब हम लड़कियों को चिड़ियों की तरह पंख लगाकर खुले गगन में उड़ने दें और ऊँचाइयों के शिखर को छूने दें। यकीन रखिए बदलाव सुखद होगा और बेटियां भी निराश नहीं करेंगी। हमें इस कथन पर एक बार सोचने की जरूरत है, जिसमें यह कहा गया है कि 'हम बेटी को बेटा कह सकते हैं, पर बेटे को बेटी नहीं कह सकते।

# साक्षात्कार

त्रिशूल पत्रिका के षष्ठम संस्करण के प्रकाशन के अवसर पर हमने हिंदी समिति के भूतपूर्व संयोजक से बातचीत की।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान हमीरपुर के 2013-2017 सत्र के विद्यार्थी रह चुके श्री अमित गुप्ता जी सैमसंग जैसी बड़ी कंपनी को अपने कुछ वर्ष समर्पित करने के पश्चात हाल ही में उत्तर प्रदेश प्रशासनिक सेवा 2020 की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए हैं।

अपने दृढ़ निश्चय एवं कठिन परिश्रम के कारण अपनी गतिशीलता न खोने एवं सदैव केवल अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहने को इन्होंने अपनी सफलता के प्रमुख कारण बताए।

त्रिशूल पत्रिका के दो अंकों का प्रकाशन इन्हीं की पर्यवेक्षण में हुआ था जिसमें से पंचम अंक के प्रमुख संपादक यह स्वयं रह चुके हैं।

इन्होंने बातचीत के दौरान कॉलेज तथा हिंदी समिति में बिताये अपने कुछ विशेष पलों को याद किया तथा अपने अभी तक के जीवन में आई बाधाओं और उनसे जुड़े संघर्षों को भी साझा किया। प्रस्तुत है उनसे बातचीत का एक प्रमुख अंश।



**अमित गुप्ता**

2013-2017

(रा० प्रौ० सं० हमीरपुर)





मेरा ऐसा मानना है कि किसी भी परीक्षा की तैयारी करने हेतु सबसे ज़रूरी है समय का सही उपयोग करना। अगर कोई व्यक्ति अपने मन में दृढ़ संकल्प कर ले और सच्चे मन से तैयारी में लग जाए, तो दुनिया की कोई भी बाधा उसका ध्यान नहीं भटका सकती।



### 1. प्रशासनिक सेवाओं में आपकी रुचि कब से थी और उसके लिए आपको प्रेरणा कहाँ से मिली?

मैं यहाँ कोई फिल्मी बात नहीं कहना चाहूँगा, सच बताऊँ तो मेरा प्रशासनिक सेवाओं में आने का सपना बचपन से था। यहाँ तक कि जब मैंने संस्थान में दाखिला लिया था तब से ही मैंने प्रशासनिक सेवाओं में जाने का मन बना लिया था। लेकिन मुझे पहले वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए एक अच्छी Tech - Giants में नौकरी प्राप्त करनी थी। अपने अंतिम वर्ष में मैंने अपने लक्ष्य के मुताबिक सैमसंग जैसी बड़ी कंपनी में नौकरी प्राप्त की। नौकरी प्राप्त करने के उपरांत ही मैंने अपने अंतिम सेमेस्टर से ही प्रशासनिक नौकरियों एवं उनके एग्जाम पैटर्न के बारे में गूगल पर सर्च करना प्रारंभ कर दिया था। यही मेरी प्रशासनिक सेवाओं की तैयारियों का प्रारंभिक बिंदु था।

### 2. आपके अनुसार किसी इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ने वाले छात्र को इंजीनियरिंग एवं प्रशासनिक सेवा के परीक्षा की तैयारी करना कहाँ तक तर्कसंगत है ?

सिविल सर्विस परीक्षा की तैयारी छात्र एवं छात्राएं कॉलेज से भी कर सकते हैं, लेकिन पहले उन्हें दूसरे सभी उपलब्ध विकल्पों के बारे में गहराई से सोचना चाहिए। सभी विकल्पों के बारे में समझने के पश्चात अगर रुझान सिविल सर्विस परीक्षा के तरफ ही बन रही हो, तो सर्वप्रथम वह इस परीक्षा के विभिन्न चरणों एवं पाठ्यक्रमों के बारे में जानकारी प्राप्त करें। जानकारी आप गूगल की मदद से या टॉपर्स द्वारा दी गई जानकारी से भी प्राप्त कर सकते हैं।

3. सर, आजकल देखा जा रहा है कि लोग बड़े एवं प्रतिष्ठित संस्थानों से B. Tech एवं M. Tech करने के बाद भी प्रशासनिक सेवाओं की तरफ जा रहे हैं। ऐसा क्यों? आपने प्राइवेट कंपनी में भी नौकरी की है, और अब सरकारी नौकरी की तरफ जा रहे हैं, तो दोनों का अनुभव भी बताएँ।

राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित संस्थानों से पढ़कर हमें बहुत अनुभव प्राप्त होता है। इन प्रतिष्ठित संस्थानों में दूर- दूर से लोग आते हैं, तो दुनिया के बारे में ज्यादा पता रहता है, और ज्यादा से ज्यादा अवसर के बारे में भी पता चलता है, यानी कि एक अच्छा एक्स्पोज़र मिल जाता है। प्राइवेट सेक्टर 9 से 5 नौकरी है, और मुझे ऐसा लगा कि मुझे अपने जीवन को इस तरह नहीं देखना। मेरा रुझान पहले से ही सिविल सर्विसेज की तरफ था क्योंकि अगर आप किसी की थोड़ी सी भी परेशानी दूर कर सकें तो वह बहुत बड़ी बात है। एक जिले का कार्यभार एवं जिम्मेदारी आप पर होगी और आप उन लोगों के लिए ज़रूरी होंगे। मुझे अपने जीवन में ऐसा ही कुछ चाहिए था।

### 4. क्या आर्थिक रूप से कमजोर छात्र स्वाध्याय के माध्यम से प्रशासनिक सेवा जैसी परीक्षाओं की तैयारी कर सकते हैं? क्या कोचिंग लेना आवश्यक होता है?

कोचिंग लेना आवश्यक नहीं होता है, मैंने भी कोचिंग नहीं लिया था। मैंने अपनी तैयारी नौकरी के साथ-साथ सेल्फ स्टडी से की थी। कोचिंग दिशा निर्देश में मदद करता है, लेकिन हम आज-कल गूगल से सभी जानकारी निकाल सकते हैं। सकारात्मक होकर मेहनत करने से सफलता जरूर प्राप्त होती है।

**5. क्या जॉब के साथ-साथ प्रशासनिक सेवा जैसे कठिन परीक्षाओं की तैयारी की जा सकती है ? आपने समय का प्रबंधन कैसे किया और इतने लंबे अंतराल तक खुद को प्रेरित कैसे रखा ?**

नौकरी के साथ ही प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षा की तैयारी करना बेहद चुनौतीपूर्ण रहा। दफ्तर की जिम्मेदारियों के साथ-साथ पाठ्यक्रम की किताबों को भी बराबर समय देना, जितनी लगन से काम करना हो, उतनी ही लगन से परीक्षा की तैयारी करना - इन सभी चुनौतियों के साथ मेरा सफर रोमांचक रहा।

नौकरी के साथ पढ़ाई के लिए अलग से तो समय मिल नहीं पाता था किंतु कहते हैं न "जहाँ चाह है वहाँ राह है"। इसी को ध्यान में रखते हुए मैंने भी दृढ़ निश्चय किया और अपनी राह बनाई। रोज सुबह जल्दी उठने की कोशिश रहती थी ताकि दफ्तर जाने से पहले जितना संभव हो पढ़ सकूँ।

दफ्तर में खाने के समय से 5-10 मिनट निकालना, लिफ्ट में खड़े रहकर पढ़ना, घर वापसी के समय बस में बैठे फोन से पढ़ना, यह कुछ छोटी-छोटी कोशिशें थीं जिन्होंने मेरे संकल्प को अडिग रखा। मेरा ऐसा मानना है कि किसी भी परीक्षा की तैयारी करने हेतु सबसे ज़रूरी है समय का सही उपयोग करना। अगर कोई व्यक्ति अपने मन में दृढ़ संकल्प कर ले और सच्चे मन से तैयारी में लग जाए, तो दुनिया की कोई भी बाधा उसका ध्यान नहीं भटका सकती।

**6. सीनियर द्वारा कहा जाता है कि प्लेसमेंट की तैयारी इंजीनियरिंग के तृतीय वर्ष से भी बड़े ही आराम से किया जा सकता है। यह भ्रम मात्र है या सच?**

दरअसल, ये विद्यार्थी पर निर्भर करता है कि उनका क्या लक्ष्य है, उन्होंने पिछले दो साल में क्या-क्या स्किल्स हासिल किया है। कॉलेज में मौज-मस्ती करें पर अपना दो साल बर्बाद भी नहीं करना है। द्वितीय वर्ष में गंभीरता तो होनी ही चाहिए। निस्संदेह तृतीय वर्ष में प्लेसमेंट के लिए मेहनत करनी है लेकिन प्रारंभिक दो वर्ष व्यर्थ भी नहीं करना है।

उनमें अपने स्किल्स(कौशल ) व एक्सपोज़र बढ़ाएँ। यदि विद्यार्थी किसी अच्छी कंपनी में प्लेसमेंट चाहते हैं तो यह उनकी एकाग्रता एवं अध्ययन क्षमता पर भी निर्भर करता है।

**7. सर जैसा कि कोविड-19 के कारण पिछले 1 साल से इंजीनियरिंग के सभी विद्यार्थी अपने घर पर हैं और सभी की ऑनलाइन क्लासेस चल रही हैं। क्लब, इंटरैक्शन, कैंपस लाइफ इन सभी को हम लोगों ने मिस किया है। आपके हिसाब से हमारे कैरेक्टर डेवलपमेंट में और कैरियर की दृष्टिकोण से यह सभी क्या अहमियत रखते हैं ? हम लोगों ने क्या-क्या खोया है?**

यह पूछिए कि आप लोगों ने क्या नहीं खोया है। (हंसते हुए) लाइफ तो कॉलेज में ही होती है। उसके बाद तो 10 से 6 की नौकरी बच जाती है। यह किसी भी स्टूडेंट की लाइफ का गोल्डन पीरियड है। मेरे हिसाब से कॉलेज सिर्फ क्लासेस लगाने की जगह नहीं होती। यहाँ स्टूडेंट अपने जीवन के नए पहलुओं को जानते हैं और क्लब, इंटरैक्शन के माध्यम से हमारे अंदर लीडरशिप क्वालिटी, कम्युनिकेशन स्किल, ग्रुप में काम करने का तरीका, कैसे किसी इवेंट को मैनेज करते हैं, कैसे किसी इवेंट का सफलतापूर्वक आयोजन करते हैं और भी बहुत कुछ सीखते हैं। माता-पिता के आदेश पर चलने वाले बच्चे यहाँ आकर अपने ढंग से जीवन को सँवारना शुरू करते हैं।



## हिंदी साहित्य की एक झलक

-वैष्णवी सूद

हिंदी हमारी मातृभाषा है, सभी को पता है, परंतु कितने लोग इस भाषा की असली सुंदरता से वाकिफ हैं? हममें से कई लोग 'Novels' यानी उपन्यास पढ़ने के शौकीन हैं। मैंने भी कई पढ़ी हैं। किंतु आज मैं पूछ रही हूँ, उनमें से कितनी हिंदी साहित्य से जुड़ी थीं? ज्यादातर लोगों ने अंग्रेजी की ही 'Novels' पढ़ी हैं, और इसमें बुरा भी कुछ नहीं है। लोग वही पढ़ेंगे जो उन्हें अच्छा लगता हो, पसंद हो। कई लोग इस समय यही सोच रहे होंगे की हिंदी में पढ़ने में मज़ा कहाँ आता है हिंदी की कहानियाँ पुराने ज़माने जैसी लगती हैं, या हिंदी उपन्यास इतने प्रचलित ही नहीं हैं। लोगों का झुकाव अंग्रेजी की तरफ बढ़ता जा रहा है, और यह हमें साफ दिखता है।

यह बात सच है कि आजकल अंग्रेजी साहित्य प्रचलन में है एवं खूब सराहा जा रहा है। विदेशी साहित्यकार ही नहीं, अपितु भारतीय लेखक भी इस क्षेत्र में उत्कृष्ट काम कर रहे हैं। चेतन भगत, दुर्जोय दत्ता इत्यादि नाम इसके बेहतरीन उदाहरण हैं। आप में से भी कईयों ने इनकी किताबें देखीं और पढ़ीं होंगी।

परंतु मुख्य बात यह है कि कई भारतीय लेखक ऐसे भी हैं जिन्होंने हिंदी साहित्य में प्रकृष्ट कार्य किया है, परंतु उन्हें इतनी प्रसिद्धि प्राप्त नहीं हुई। कई ऐसे भी उपन्यास हैं जो कला एवं रचनात्मकता की अनूठी मिसालें हैं, परंतु उन सभी रचनाओं को बस इसलिए प्रसिद्धि नहीं मिली क्योंकि हिंदी साहित्य आजकल 'trend' में नहीं है।

जब हम सभी हिंदी में ही बातों का आदान प्रदान करते हैं, तो हम साहित्य को पढ़ने से क्यों हिचकिचाते हैं?

क्यों न आज हम हिंदी साहित्य के बारे में अपने ज्ञान को तराशें, और कुछ ऐसे उपन्यासों के बारे में बात करें, जिन्हें पढ़कर लोग काफी प्रभावित हुए, और जिन्होंने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपना अलग नाम किया। ताकि जो लोग हिंदी की कुछ अच्छी रचनाएँ पढ़ना चाहते हैं और उन्हें नहीं पता कहाँ से शुरू करें, वह प्रेरित हो सकें।



गुनाहों का देवता: यह उपन्यास जब प्रकाशित हुआ था तब पूरे देश में बलिदान और आदर्शवाद की धूम थी। मेरे एक अध्यापक ने मुझे इस उपन्यास के बारे में बताया और केवल इतना ही कहा-“ इस किताब ने मेरे जीवन का रुख बदल दिया।” केवल इतना ही काफी था इस रचना की महत्ता बताने के लिए और केवल इतना ही काफी है किसी साहित्य प्रेमी को यह उपन्यास पढ़ने हेतु प्रेरित करने के लिए।

लज्जा: यह उपन्यास इसलिए खास है क्योंकि तस्लीमा नसरीन द्वारा रचित इस पुस्तक ने न केवल बांग्लादेश में हलचल मचा दी बल्कि भारत में भी काफी ज्वाला भड़काई।

चंद्रकांता: मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि हैरी पॉटर की फिल्मों या किताबों सभी ने देखी अथवा पर पढ़ी होंगी। परंतु क्या आपको पता था कि ऐसा ही रहस्य एवं कल्पना से भरा एक उपन्यास हिंदी साहित्य में मौजूद है। यह कृति जो कि 3 भागों में विभाजित है- चंद्रकांता, चंद्रकांता संतति और भूतनाथ पाठक को अपने एक अलग ही दुनिया में ले जाती है।

ऊपर उल्लिखित कृतियों के अलावा भी बहुत सी रचनाएँ हैं जो अपने आप में अद्वितीय हैं और साहित्य एवं इतिहास के क्षेत्र में अलग नाम और स्थान रखती हैं। उदाहरण हैं: यामा-महादेवी वर्मा, कामायनी-जयशंकर प्रसाद, पिंजर-अमृता प्रीतम, गोदान, निर्मला-मुंशी प्रेमचंद, काशी का अस्सी- काशीनाथ सिंह इत्यादि। यह तो केवल कुछ नाम हैं, असली सूची तो बहुत लम्बी है।

इन सभी रचनाओं में एक बात ध्यान देने योग्य है कि कोई भी रचना 21वीं सदी में नहीं लिखी गई है। यह बात अत्यंत दुखदायी परंतु सत्य है कि हिंदी साहित्य ने 21वीं सदी में एक गहरा पतन देखा है।

लोगों में हिंदी साहित्य पढ़ने की रुचि तो घटी ही है, परंतु उस उत्कृष्ट स्तर में भी गिरावट आई है जो हमारा हिंदी साहित्य अपने स्वर्ण काल में देख चुका है। हिंदी साहित्य के घटते प्रचलन से बेहतरीन हिंदी रचनाओं का बाज़ार भी कम हुआ है। मुद्दा यह भी है कि आजकल की पीढ़ी इसलिए हिंदी साहित्य में रुचि नहीं ले रही क्योंकि हिंदी साहित्य का दायरा अभी भी पुराना है। ज्यादातर कहानियाँ अभी भी पुराने जमाने की परेशानियों एवं जीवन शैली पर ही आधारित है।

परंतु लेख इस मुद्दे पर आधारित नहीं है, बल्कि साहित्य प्रेमियों को यह बात से अवगत कराने के लिए है कि हिंदी साहित्य अभी भी मौजूद है और ऐसी कई किताबें, कई रचनाएँ हैं जो आपको हिंदी साहित्य से प्रेम करना सिखा देगी। बस ज़रूरत है एक बार प्रयत्न करने की। जब हम हिंदी समझ सकते हैं, बोल सकते हैं, तो हिंदी साहित्य को भी एक मौका देकर देख सकते हैं।

# मेरी माँ

छोटी सी मैं, जब चल नहीं पाती थी  
गोद में लिए, माँ कई चक्कर लगाती थी

भूख से जब खुद का हाल बेहाल रहा  
तब भी मेरा खाना, खुद से पहले लगाती थी

जब-जब घर में किल्लत हुई,  
हर वक्त माँ की परछाई, हमारी हिम्मत हुई

हर ऊँच- नीच में आगे, माँ खुद खड़ी हो जाती है  
आँच न आए हम पर कभी, हर शख्स से वो लड़ जाती है

मासूम सी आँखें हमें बड़े प्रेम से निहारती हैं  
हर सांस के साथ माँ, बार-बार नजर हमारी उतारती है

खुशियों को अपनी, हमारे नाम सा कर दिया  
सारी उलझनें जो हमारी, उन्हें आसान सा कर दिया

कैसे एक ही झटके में, माँ सब कुछ ही बन जाती है  
दोस्त कभी, कभी बहन मेरी माँ हर रिश्ता बखूबी निभाती है

वो गोद में उसकी, हर मुश्किल छोटी बात लगती है  
बाहर से अच्छी आज भी मुझे, माँ की रोटी स्वाद लगती है

गुस्सा हो चाहे, या नाराज़गी कोई माँ के आगे सब फीकी ही पड़ी

जब चेहरा वो भोला भाला सा, सामने यूँ आ जाता है  
पत्थर हो तब दिल भले ही, झट से ही पिघल जाता है

मैं जैसे ही माँ से मुँह सा फेरूँ वो तुरंत बड़ा घबराती है

जताती नहीं है अक्सर ज्यादा मगर प्यार बड़ा लुटाती है

साल बदले, बदले रिश्ते भी कई मैं भी शायद पुरानी सी न रही

माँ मगर, वहीं खड़ी जैसी थी कल, आज भी वही

-नेहल सिंहल





# ख्वाहिशों के पन्नों में मेरा कॉलेज

-वंदना कुमारी

जब मैं एकांत में बैठकर अपने स्वनिर्मित संसार में विचरण करती हूँ तो सहसा मेरे मानस पटल पर हिमाचल की मनोहर वादियों में स्थित हमारे कॉलेज के चित्र उभर आते हैं। अति रमणीक दृश्य! जो किसी भी प्रकृति प्रेमी को आकर्षित करने के लिए काफी है। उस सुरम्य वादी में अठखेलियां करने का ख्याल आना तो स्वाभाविक है। प्रकृति से मेरा जुड़ाव हमेशा से ही रहा है और जब भी मेरा ध्यान अपने कॉलेज की ओर जाता है तब प्राकृतिक सुंदरता से सुशोभित कॉलेज के कैंपस में घूमने की मेरी इच्छा प्रबल हो जाती है। वहां का काल्पनिक भ्रमण मात्र ही मुझे सम्मोहित कर लेता है और अनायास ही ढेर सारी भावनाओं का सैलाब उमड़ आता है।

हालांकि बीता वर्ष सभी के लिए कोरोना वायरस की वजह से संघर्षपूर्ण रहा है परंतु मनुष्य का अपनी इच्छाओं पर अंकुश लगाना सदैव दुष्कर रहा है। मैं भी अपने कॉलेज जाने की प्रबल इच्छा को नियंत्रित करने में अक्षम हूँ। नामांकन के बाद कॉलेज के कुछ सहपाठी मेरे दोस्त बन गए और उनसे मिलने की इच्छा कोरोना के भय के बावजूद है। पर इस वैश्विक महामारी ने मेरी सभी इच्छाओं पर अवरोध लगा दिया है। इसके बढ़ते प्रकोप ने हमारे संस्थान को कई महीनों से बंद कर रखा है। आशा है समय का यह चक्र जल्द ही खत्म होगा और हमें कॉलेज का जीवन जीने का अवसर प्राप्त होगा।



# नए लोग, वही पुरानी ख्वाहिशें



छिछोरे व 3 इडियट जैसी मूवी देखने के बाद हम सभी को भी वैसी ही कॉलेज और हॉस्टल लाइफ जीने का मन करता है। सोचा था --- कॉलेज जाने के बाद फ्रेशर पार्टी होगी। कॉलेज के फेस्ट और टेक्निकल फेस्ट का आनंद ले पाएँगे।

हॉस्टल में दोस्तों के साथ मस्ती होगी, नए-नए लोगों से जान पहचान होगी और क्लासेस बंक करने का अवसर भी मिलेगा, कॉलेज की ट्रिप वगैरह में घूमेंगे, हिमाचल के सुंदर-सुंदर जगह पर जाएंगे ---- यह सब न जाने कब सच होगा? कब खुलेगा हमारा कॉलेज?



- अखिलेश भट्ट

हाँ छिछोरे जैसे उल्टे सीधे प्लान अपना सकते हो, 3 इडियट्स के जैसे मशीन भी खोल सकते हो लेकिन 5000 रुपये के वार्डन के जुर्माना के साथ....और हाँ हम भी तुम्हारी ही कश्ती में सवार हैं, हम भी इंतज़ार ही कर रहे हैं न जाने कब वापस जाना होगा।



अपने कॉलेज के बारे में सोचते ही मेरे मन में एक गाना गूँजने लगता है," ये हसीं वादियाँ ये, ये खुला आसमाँ आ गए हम कहाँ....."। इस सबके अतिरिक्त हमें ऐसा लगता है कि कॉलेज एक ऐसी जगह है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति औरों से ज्यादा खुद को खोजता और जानता है। यहाँ वह अपने नए-नए दोस्त बनाता है, और जिंदगी का एक सुनहरा समय उनके साथ कक्षाओं, मैस, मैदानों और छात्रावास में गुजारता है।

**-ऋषभ कुमार सिंह**

यह बात तो सही है कि कॉलेज की हरियाली देखकर यह धुन गूँजने लगती है... तुमको पाया है तो जैसे खोया हूँ, कहना चाहूँ भी तो तुमसे क्या कहूँ किसी ज़बां में भी वो लफ़्ज़ ही नहीं, जिनमें तुम हो क्या तुम्हें बता सकूँ। जहाँ थोड़ी पढ़ाई और ढेर सारी मस्ती वाली बात है वह दूर के ढोल सुहाने लगने जैसी बात है। लेकिन यह शत प्रतिशत सत्य है कि पढ़ाई के साथ मस्ती तो होती है।

बड़े बुजुर्ग कह गए हैं- आशा ही निराशा का कारण है। मन में बड़ी-बड़ी आशाएँ पाले बैठा था। कॉलेज जाने का नाम सुनते ही गिटार की धुन और करन जौहर की फिल्म में मन को प्रफुल्लित कर देती थीं। एन•आई•टी• हमीरपुर मिलने के बाद मन और नई आशाएँ पाले बैठा था, जैसे सर्द हवाएँ चलेंगी, बर्फ पड़ेगी और इन्हीं मस्त मौसम में कॉलेज के चार वर्ष बितेंगे।



**-लवकेश बसंत**

इन बातों से तो एक ही लाइन याद या रही है " ऐ दुःख काहे खत्म नहीं होता"। बच्चें हर वर्ष ही यहाँ सोच कर आते हैं कि सर्दी में बर्फ पड़ेगी पर आपको यह जानकर भी दुःख होगा कि यह ख्वाब भी पूरा नहीं होने वाला। अभी तो तीन साल हैं सपने देखते रहिए, ख्वाब बुनते रहिए, कोई न कोई ख्वाब सच जरूर होगा। और हाँ, करन जौहर की फिल्मों जैसी गिटार की धुन के लिए भी आपको खुद धुन बजानी पड़ेगी।

“मैं सोचता था कि कॉलेज में जाकर घर के बंधन से मुक्त, न तो कोई कुछ कहने वाला, न किसी बात के लिए कोई मना करनेवाला, मतलब टेंशन फ्री। सोचा था कि हिमाचल की वादियों में मजे होंगे, पर पता यह नहीं था कि घर बैठे ‘ऑनलाइन क्लास’ को झेलेंगे।



हमारा दिन किस तरह समाप्त हो जाता है, पता ही नहीं चलता। वैसे तो सोचा था कि कॉलेज जायेंगे, नये दोस्त बनेंगे, हॉस्टल की लाइफ जियेंगे पर सभी चीजें हमारी आशाओं के विपरीत ही हुई, न गए कॉलेज, ना मिली हॉस्टल लाइफ, दोस्त बने पर वे भी ऑनलाइन। “चाहे थे कॉलेज के सुख, पर उनको हम पा न सके।

एक साल यूँ ही बीत गया, इसमें कुछ कर दिखा न सके। “

- ओजस्वी पुंडीर

कोई बात नहीं, 3 साल में एक बार तो कॉलेज खुल ही जायेगा, तब कर दिखाना कुछ। हॉस्टल का हिमाचल की वादियों में होने का मतलब केवल मज़ा ही नहीं है, बंदरों के साथ लड़ना सीखना होगा, पानी की भी थोड़ी दिक्कत देखनी होगी, और..... बाकी कॉलेज में आ कर ही देखना, सब हम ही बता देंगे तो कॉलेज क्या बताएगा।

जल्द ही सब साथ होंगे।

सोचा था जायेंगे कॉलेज, नए दोस्तों से होगी मुलाकात,  
पढ़ना सोना भूल ही जायेंगे, मजे करेंगे दिन-रात।  
सैर सपाटा खूब करेंगे, लेंगे कई तस्वीरें,  
आखिर जगह है ही इतनी सुन्दर, जैसे चारो तरफ जड़े हो हीरे।



**-इप्सिता सिंह**

हॉस्टल में निःसंदेह खूब मज़ा आता है, रात भर जागते भी हैं और मूवी भी देखते हैं। दोस्तों के साथ गपशप भी करते हैं और समय आने पर उनकी मदद भी करते हैं। पर ज़्यादा मज़ा करने पर सेमेस्टर एग्जाम में सजा भी मिल सकती है। कॉलेज में जब हर रोज़ सुबह चल कर क्लास लगाने जाना पड़ेगा। रविवार के दिन कपड़े धोने पड़ेंगे और वही दाल रोज़ खानी पड़ेगी, तब यह दिन भी बड़े याद आयेंगे।



“महाविद्यालय से मुझे बहुत उम्मीदें थीं। मैं आवासीय विद्यालय में पढ़ा हूँ तो छात्रावास में रहना मेरे लिए जीवनरेखा है। कॉलेज में कई सारी अच्छी सुविधाएँ हैं जैसे पुस्तकालय, क्रीडास्थल, संगणक केंद्र, ओपन एयर थिएटर, व्यायामशाला आदि। मैं इन सब का लाभ उठाना चाहता था, नए दोस्त बनाना चाहता था। अपने जीवन के सबसे कीमती पलों का अनभुव करना चाहता था।”

**-अभिनव शर्मा**

अरे अरे! चार साल नहीं बीते हैं अभी, सब करो! तुम्हारी सारी इच्छाएँ पूरी होंगी, सब कुछ है अपने यहाँ। हाँ, बस पुस्तकालय में एग्जाम से पहले के सात दिन तक दिख जाया करना, काफी है। जिम तो खैर हमने भी बाहर से ही देखा है, तुम शायद अंदर के दर्शन कर लो। और सबसे ज़रूरी बात, अगर हॉस्टल में रहना है तो एक लक्ष्मण रेखा भी खींच लो नहीं तो लोग यहाँ अजीबोगरीब शौक पाल लेते हैं।



# चार साल बेमिसाल

-अमन वर्मा

"हम तो अकेले ही चले थे इस अनजान से सफर में,  
लोग जुड़ते गए कारवाँ बनता चला गया।"

यह उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारे कॉलेज जीवन को बहुत अच्छे से परिभाषित करती हैं। हम, हमारी और आप शब्द बढ़-चढ़ के उपयोग होने वाले हैं, क्योंकि हम नवाबों के शहर 'लखनऊ' क्षेत्र से ताल्लुक रखने वाले हैं।

जहाँ आपको अपने ही शहर में निकलने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, वहाँ एक छोटे से गाँव से निकल कर इन वादियों से भरे शहर में आना अपने आप में ही गर्व की बात होती है। मुझे आज भी याद है वो चंडीगढ़ से हमीरपुर तक का वो पहला सफर; उन आठ घंटों के सफर में मैं एक क्षण भी नहीं सो पाया क्योंकि उन वादियों, ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों को देखने की चाह और इंटरनेट पर देखे हुए चित्रों को देखकर की हुई कल्पनायें आज सब वास्तविकता में नजर आ रहे थे। वो विंडो वाली सीट पर बैठ कर मैं बस के बाहर ही सब नज़ारे निहारे जा रहा था, और कल्पनाओं में डूबा हुआ बस एक आवाज का इंतजार कर रहा था कि कंडक्टर आकर बोले कि मीरपुर आ गया (मीरपुर इसलिए बोला क्योंकि कंडक्टर हमीरपुर को मीरपुर ही बोलते हैं)। और वो क्षण भी आया जब बेहद खूबसूरत NITH Campus में प्रवेश लेने का मौका मिला।

परन्तु जिस द्वार से पहली बार NITH में प्रवेश करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ शायद ही किसी को मिला हो। मुझे अनजाने में डेढ़ गेट के नाम से मशहूर गेट से प्रवेश करने का मौका प्राप्त हुआ। फिर वहीं से ही बंद पड़ी एक किताब का पहला पन्ना खुल गया और वह अनजान सा सफर यहीं से प्रारंभ हो गया। यहाँ न तो कोई अपना था न तो कोई पराया; वही गिन कर 2 लोग मिले अपने रूममेट जिन्हें अपना मानने की मजबूरी थी। अब क्या था सुना तो हुआ ही था कोटा में कि कॉलेज में केवल मजे ही होते हैं तो वो सब करने की चाह थी कॉलेज आकर जो स्कूल और कोटा में करने में सकुचाते थे।

पहली क्लास पहला दिन अध्यापक भी सबसे पूछ रहे हैं कि आपका लक्ष्य क्या है, सबकी तरह हमें भी समझ नहीं आ रहा था कि बताये तो बताये क्या हमने भी मजे-मजे में बोल दिया कि गेट तो निकाल ही लेंगे; हमें क्या पता था कि ये JEE ADVANCED का ही साथी है।

प्रथम वर्ष था तो एक सीधा-साधा शरीफ बच्चा प्रतिदिन ही क्लासेस लगायेगा खैर ये सिलसिला ज्यादा दिन तक तो नहीं चलने वाला था इससे तो सारे ही वाकिफ हैं; अब क्या था मित्र बनने प्रारंभ हो गए।



हम अपनी ही संगति वाले मित्रों को जोड़ रहे थे जिनसे बात करने में कुछ सकुचाहट न महसूस हो। अब क्या कॉलेज था तो यहाँ काफी क्लब्स, टीम्स इत्यादि में भी जुड़ने का मौका मिला। सच बताऊँ तो यह सबसे बेस्ट जगह होती है, अपने आप को सबके सामने प्रदर्शित करने की जहाँ आपको एक परिवार जैसा माहौल मिलता है। मैं सबका तो नहीं कह सकता पर मुझे तो इन सबमें एक परिवार जैसा माहौल मिला। जहाँ आपकी किसी भी प्रकार की समस्या में आपसे अनुभवी लोग जिन्हें हम सीनियर कहते हैं वो आपके साथ हमेशा खड़े हुए नज़र आयेंगे। फिर क्या समय बीतता गया और लोग जुड़ते गए। अब हम भी सीनियर बन गए थे; हमें भी लोग अपनी समस्याएं बताने लगे थे। वो सबसे अच्छा भाग लगता है कि लोग आपको न ज्यादा जानते हुए भी आप पर विश्वास करते हैं कि क्योंकि आपने माहौल ही ऐसा दिया हुआ है।

फिर क्या था पहले महीने गुजरते थे अब सेमेस्टर गुजरने लगे पता भी नहीं चल रहा था फिर साल गुजरने लगे और ऐसे गुजरते-गुजरते ही किसी बुधवार को हम 12th की डिग्री हर जगह दिखाने वाले बालक से अब ग्रेजुएशन की डिग्री को प्रदर्शित कर सके ऐसे व्यक्ति बन चुके थे। अब सफर का प्रारंभ और अन्त तो कर ही चुके हैं तो थोड़ा मध्य में भी घूम आते हैं। वैसे हमने त्रिउंड और धर्मशाला जैसी ट्रिप्स थोड़ी बहुत प्रथम वर्ष में ही कर ली थी और द्वितीय वर्ष में भी कुल्लू, पार्वती वैली जैसे जगहों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। पर अभी वो ख्वाहिश नहीं पूरी हुई थी कि मैं आसमान को देख रहा हूँ और ऊपर से बर्फ के अत्यंत छोटे-छोटे कण मेरे ऊपर गिर रहे हों। फिर क्या था समय गुजरा और एक सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ अपने भाई बहनो के साथ शिमला जैसे शहर में घूमने का एवं वहाँ पर वह अधूरी ख्वाहिश भी पूरी हो गयी जो इतने दिन से मन को परेशान कर रही थी कि हिमाचल गए और बर्फबारी नहीं देखी तो क्या देखा, अब ये बात मुझे तो कोई नहीं बोल सकता था।

शिमला, कुफरी जैसी जगहों पर घूमना दूसरे शहर से आने वालों लोगों के लिए एक अलग ही अहमियत रखता है।

कुछ बुरे चरण भी आये इस सफर में जिसमें काफी लोग हमारे साथ खड़े थे। तब एक एहसास सा हुआ कि कुछ तो पाया है हमने इस चार साल के बेमिसाल सफर में। कुछ और भी बातें जरूर सीखी जैसे कि कुछ लोग हमेशा आपको पीछे करने में लगे ही रहेंगे पर आपको केवल उन सब को अनदेखा करते हुए आगे बढ़ते जाना है।



और अंत में एक कहावत है न कि "इंजीनियरिंग आपको इंजीनियरिंग के अलावा सब कुछ सिखा देती है" तो वह सिद्ध होता नजर आ रहा था। हालात ऐसे थे कि लोग क्या-क्या पढ़ने के लिए आये थे और किस क्षेत्र में नौकरियाँ लेकर जा रहे थे। पर वह बात भी सही ही थी कि इस दौर में लोगों के लिए क्षेत्र नहीं एक ठीक-ठाक नौकरी महत्वपूर्ण थी। और उनका passion एक कोने में शर्म से पड़ा होकर धक्के खा रहा होता था।

तो इस बेमिसाल किस्से को यहीं पर विराम देते हैं, क्योंकि ये चार साल इत्ते स्वर्णिम और जीवन की यादों का एक विशाल संदूक है कि अगर लिखे गए तो पूरी पत्रिका एक ही लेख से भर जायेगी।

## पथिक

पंख बिना उड़ जाता कहीं,  
गैरों से टकराता वही।



पग-पग बढ़ता जाता वो,  
पीछे कभी हटता नहीं।

हर असफलता से सीख ले  
फिर वो राह भटकता नहीं,

आते काँटे राहों में बहुत  
परवाह उनकी करता नहीं,

नई ऊँचाइयों पर पहुँच कर  
इतिहास नया रचता वही।

उन सब को पार कर  
उनसे कभी बिखरता नहीं।

पग-पग बढ़ता जाता वो,  
पीछे कभी हटता नहीं।

रास्ते बहुत खोजे उसने  
फिर उन्हें दोहराया नहीं,

-ओजस्वी पुंडीर

सबसे हटकर चलने में  
वह कभी घबराया नहीं।

# नीरस हो रहा जीवन मेरा

नीरस हो रहा जीवन मेरा  
तुम बिन भाए न साँझ सवेरा

नीरस हो रहा जीवन मेरा  
मीरा के प्रभु मोहि भरोसा तेरा

तुम बिन और न कोई अब मेरा  
नीरस हो रहा जीवन मेरा

सुना है नाम तारता है तेरा  
इसी सहारे अब जीवन मेरा

नीरस हो रहा जीवन मेरा  
विषयों ने है मुझको घेरा

सब ओर से अब छाया अंधेरा  
नीरस हो रहा जीवन मेरा

अमावस का है ये अंधेरा  
पूनम सा उज्ज्वल रूप ये तेरा

तुम आ जाओ मेरे चंदा  
तभी मिटेगा अब ये अंधेरा

नीरस हो रहा जीवन मेरा  
काम क्रोध से मैं अब हारा

मुझ दुखिया का तू ही सहारा  
नीरस हो रहा जीवन मेरा

कैसे लगाऊँ लगे न मन मेरा  
फिर भी है पाना दर्शन तेरा  
नीरस हो रहा जीवन मेरा

देना ना था जो दर्शन तुमको  
क्यों फिर बुलाया तुमने मुझको

माना हूँ पापी मेरे स्वामी  
जैसा भी हूँ बस हूँ तुम्हारा  
नीरस हो रहा जीवन मेरा

अपना लो इस वाणी को मेरी  
महिमा गाने को हारा तेरी  
रूप माधुरी है तेरी रसमयी  
रस की खान हो कहे आनंदमयी

नीरस को भी सरस करा  
नाम को जिसने हृदय में भरा  
आ जाओ अब तो मैं हूँ हारा  
नीरस हो रहा जीवन मेरा

-अभिषेक शर्मा





## छोटी सी बात

-आदित्य नाथ सुमन

चलो एक छोटी बात बताता हूँ  
कुछ आज तुम्हें समझाता हूँ

तेरे आँसू तकलीफों की  
जब उसको कोई फिक्र नहीं  
तेरी खुशियों और बातों की  
उसकी बातों तक में ज़िक्र नहीं

फिर भी तुम इसपे ध्यान न दो  
और आँख मूँद कर प्यार कहो  
तो क्षमा करो जो मूर्ख कहूँ  
और दुआ कि तुम सा कोई मूर्ख न हो

गर बुरा तुम्हें पहले न लगा  
तो अब क्यों ये तुम्हें चुभता है  
और गर जो अब ये बीँध रहा  
करो गौर, 'सुमन' सच कहता है

मुझे पता नहीं इसे क्या बोलूँ  
पर प्यार नहीं ये निश्चित है  
मान रहा समझदार तुम्हें  
तो पथ निश्चित करना अब तुमको है

सोचो खुद के लिए भी अब कुछ  
क्या उचित क्या अनुचित है



## मेरा मौसम

-परियांशु अग्रवाल

खिड़की से बाहर का मौसम,  
खिड़की के अन्दर का मौसम।  
कौन सा इन में मेरा मौसम ?

बाहर बादल जो हैं गरज़ रहे,  
रूँ मूसलाधार जो बरस रहे।  
ये खुशी है इनकी या है ग़म,  
जो रिस रहा मद्धम मद्धम ?

है अन्दर भी जो उथल-पुथल,  
बेचैनी बढ़ रही पलपल।  
क्या असर है ये इस मौसम का !  
किस बात की आखिर है हलचल ?

क्या मैं भी उस बादल सा हूँ,  
जो बरस नहीं सका अब तक?  
या फिर मैं उस पंछी सा हूँ,  
जो भटक ही रहा था अब तक ?

रूँ तो खिड़की के अन्दर एक मौसम,  
एक खिड़की के बाहर भी मौसम ।  
फिर भी मुझे क्यों पता नहीं ;  
है कौन सा इन में मेरा मौसम?



# इंटरनेट

-अर्जुन तलवाड़

मुझे पता है कि लेख लिखने के लिए इंटरनेट बहुत पुराना विषय है, लेकिन कोरोना की वजह से लॉकडाउन के दौरान यह सबसे महत्वपूर्ण विषय बन गया है। आज इंटरनेट हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। हमें विभिन्न कार्यों जैसे अध्ययन, मनोरंजन, बैंकिंग, खरीदारी, आदि करने के लिए हर रोज़ इंटरनेट की आवश्यकता होती है।  
इंटरनेट के बारे में अधिक चर्चा करते हैं -

## ● इंटरनेट के उपयोग-

हम सभी कोविड के दौरान दुनिया की स्थिति देख सकते हैं। हम सीमाओं से अलग हो गए हैं लेकिन इंटरनेट से जुड़े हुए हैं। इंटरनेट की मदद से हम कोरोना मामलों की नियमित अपडेट प्राप्त कर रहे हैं। स्कूल अभी भी बंद है, लेकिन इंटरनेट के माध्यम से प्रत्येक छात्र को इस कठिन समय में भी शिक्षा प्रदान की जा रही है। यह सब इंटरनेट की वजह से ही संभव है कि हम किसी भी जानकारी से बस कुछ ही कदम दूर हैं। इंटरनेट ने हमारे जीवन को और अधिक सुविधाजनक बना दिया है। पहले संदेशों को पत्रों के माध्यम से भेजा जाता था, जो कि बहुत समय लेने वाली प्रक्रिया थी, लेकिन अब संदेशों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचने में कुछ ही क्षण (सेकंड) लगते हैं।

● प्रतिभा की पहचान करने में मदद करता है-

कई लोग आजकल अपनी प्रतिभा और कौशल का प्रदर्शन करने के लिए इंटरनेट का उपयोग करते हैं। जब कोई भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करता है, तो पूरी दुनिया को उसके बारे में पता चल जाता है, और यह सब इंटरनेट के कारण ही संभव हो सका है। इसके कारण उनकी प्रतिभा का उपयोग राष्ट्र के सेवा करने में और राष्ट्र को गौरवान्वित करने के लिए किया जा सकता है।

● इंटरनेट के नुकसान -

कोई भी तकनीक सौ प्रतिशत लाभप्रद नहीं हो सकती है। इंटरनेट भी कई मायनों में नुकसानदेह है। छात्र सोशल मीडिया, ऑनलाइन गेम्स के आदी हो रहे हैं। मेरे कहने का यह मतलब नहीं की सोशल मीडिया खराब है, लेकिन इसका अत्यधिक उपयोग नुकसानदेह है। कई छात्र सोशल प्लेटफॉर्म पर अपना टाइम बर्बाद कर रहे हैं, बजाय इसके कि तकनीक का सही तरीके से उपयोग करें।

● निष्कर्ष-

इस तर्क में कोई शक नहीं की इंटरनेट ने हमारे जीवन को आसान बना दिया है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है की हम प्रत्येक चीज़ के लिए इंटरनेट पर निर्भर रहें। किसी भी चीज़ का सीमित उपयोग अच्छा है, लेकिन जब हम इसका अत्यधिक उपयोग करते हैं तो यह हमारे जीवनशैली को भी प्रभावित करता है। इंटरनेट ज्ञान प्रदान कर सकता है लेकिन किस प्रकार का ज्ञान?

1. संस्कृति, नैतिकता आदि जैसी अच्छी चीज़ों का ज्ञान,  
या

2. लूट, विनाश आदि जैसी बुरी चीज़ों का ज्ञान।

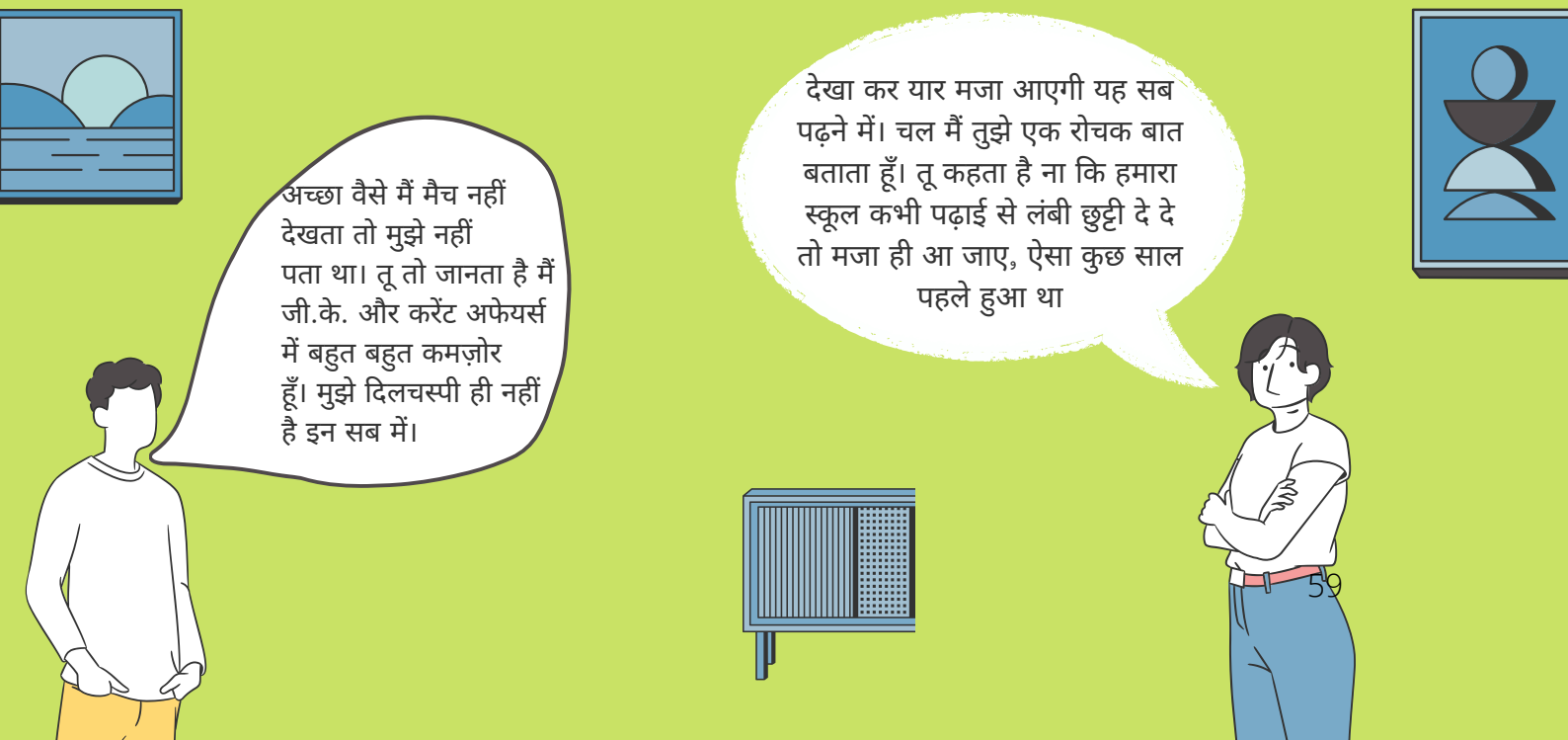
पसंद आपकी है कि आपको अच्छी चीज़ों का ज्ञान चाहिए या बुरी चीज़ों का! अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि इंटरनेट आधुनिक जीवन की सबसे महत्वपूर्ण सम्पत्ति में से एक है, लेकिन हमें इसके बुरे प्रभावों से बचना चाहिए।

# बाद में चर्चाएं होंगी



हर्रा!!! मैं जीत गया। तुम मुझसे कैरम मे कभी नहीं जीत सकते।


देखना एक दिन जरूर जीतूंगा। वैसे कल के मैच में इंडिया फिर जीत गई।



अच्छा वैसे मैं मैच नहीं देखता तो मुझे नहीं पता था। तू तो जानता है मैं जी.के. और करेंट अफेयर्स में बहुत बहुत कमजोर हूँ। मुझे दिलचस्पी ही नहीं है इन सब में।


देखा कर यार मजा आएगी यह सब पढ़ने में। चल मैं तुझे एक रोचक बात बताता हूँ। तू कहता है ना कि हमारा स्कूल कभी पढ़ाई से लंबी छुट्टी दे दे तो मजा ही आ जाए, ऐसा कुछ साल पहले हुआ था






बहुत बदलाव आए। लोगों में एकता दिखी, अपनों के प्रति स्नेह दिखा, और लोगो ने खुद पर आने वाली मुसीबत के लिए तैयार रहना सीखा

हां इतने लोगों के बीमार होने पर जब ऑक्सीजन सिलेंडर की कमी पड़ी तब सरकार की सहायता के अलावा आम लोग भी एक दूसरे को मदद पहुंचाएँ। वह ऐसा वक्त था जब सहायता सिर्फ अपने देश के ही नहीं बल्कि दूसरे देश के लोग भी एक दूसरे की सहायता करते थे। उस वक्त पूरे दुनिया में एकता देखने को मिली। जब कोई ज़रूरतमंद व्यक्ति कहता कि मुझे खून प्लाज़्मा या ऑक्सीजन सिलेंडर की जरूरत है, तब कई लोग सोशल मीडिया पर पोस्ट कर देते थे ताकि कहीं से कोई मदद मिल जाए।

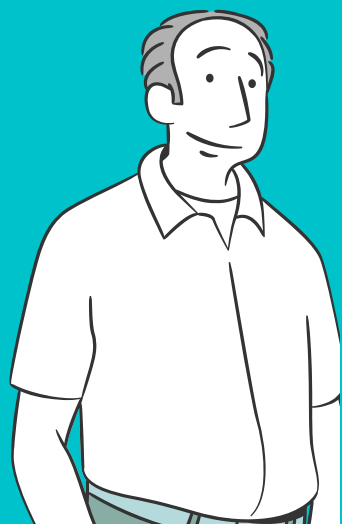
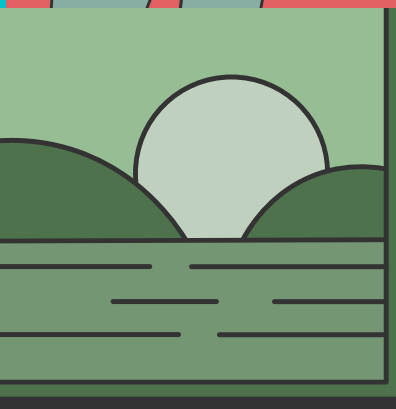


सब के घर से कम निकलने के कारण वातावरण पर ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा। हवा पहले की तुलना में काफी शुद्ध हो गई थी, इंडस्ट्रीज़ के बंद होने से, गाड़ियों के कम चलने से प्रदूषण कम हुआ तथा समुद्र का पानी भी साफ हुआ।



और तो और, मैं और मेरे दोस्त भी जानकारी इकट्ठा करते थे कि कहाँ कितने बेड खाली हैं और फिर लोगों को भेजते थे ताकि किसी भी जरूरतमंद का इलाज समय पर हो पाए

मेरे दादा-दादी तो जिंदगी में पहली बार बहुत लंबे समय तक दूर थे। घर से दूर रहकर कोई लोग अपनों के साथ होने का महत्व समझे थे और तो और दूसरों के सुख दुख को समझने की क्षमता भी बढ़ गई। लोग एक दूसरे से वीडियो कॉलिंग के जरिए बात करते थे



अरे इतना वक्त हो गया पता ही नहीं चला। अब मैं चलता हूँ।



The background is a light beige color. It features several decorative elements: dark red triangular shapes at the top and bottom corners, and a series of overlapping squares and lines in shades of grey and yellow on the left side. The text is centered on the right side of the page.

# हिन्दी समिति

**2020-21**

## अंतिम वर्ष-



## तृतीय वर्ष-





## द्वितीय वर्ष-



## प्रथम वर्ष-



## समिति की ओर से

हिंदी समिति की वार्षिक पत्रिका "त्रिशूल" के सभी पाठकों को हिंदी समिति परिवार की तरफ से नमस्कार एवं हार्दिक अभिनंदन।

किसी भी संस्था की वार्षिक पत्रिका पाठकों के मन को हर्ष विभोर करने के साथ ही उस संस्था की विभिन्न गतिविधियों का भी दर्पण होती है जो कि पूरे वर्ष की गतिविधियों को सहज रूप में संजोए रखती है। हमारे लिए यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि इस वर्ष हिंदी समिति द्वारा प्रकाशित होने वाली वार्षिक हिंदी पत्रिका त्रिशूल का छठा संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है।

हम सभी को विदित है कि वर्ष 2020 केवल हमारे लिए ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए संघर्षपूर्ण रहा है। कोरोना वायरस संक्रमण के कारण फैलने वाली कोविड 19 महामारी ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। इन परिस्थितियों में भी इस पत्रिका को प्रकाशित करना हमारे लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा। फिर भी हमने इस चुनौती का सामना किया तथा विद्यार्थीगण, शिक्षकगण के सहयोग एवं पाठकों के स्नेहिल आशीर्वाद से इस पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया। अतः हम समस्त विद्यार्थीगण एवं शिक्षकगण को हिंदी समिति के पूरे संपादकीय परिवार की ओर से धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस पत्रिका में प्रविष्टियों के माध्यम से अपना अमूल्य योगदान दिया। विशेषतः पाठकगण को अपना धैर्य बनाए रखने के लिए धन्यवाद।

हम आशा करते हैं कि भाषा और साहित्य में रुचि रखने वाले पाठकों को इस पत्रिका के लेख एवं रचनाएं पसंद आयेंगी। हमें यह पूर्ण विश्वास है कि आप सभी त्रिशूल के इस विषय वस्तु को पसंद करेंगे और त्रिशूल एवं हिंदी समिति परिवार के प्रति अपना स्नेह बनाए रखेंगे।